ज्ञानामृत मासिक

वर्ष 40, अंक 02, अगस्त 2004, मूल्य 5.00

रक्षा-बंधन पर दादी जी का दिव्य संदेश

प्रिय आत्मिक बहनो-भाइयो,

रक्षाबंधन का पावन पर्व भाई-बहन के पवित्र सम्बन्ध का सूचक है। रक्षाबंधन के इन धागों में बहन का सच्चा स्नेह समाया हुआ है। यह पर्व विश्व की सर्व आत्माओं को 5 विकारों से मुक्त होने तथा पवित्र और योगी बनने की प्रेरणा देता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी यह 5 विकार ही मनुष्य मात्र के सभी दु:खों एवं अशान्ति का मूल कारण है। पवित्रता ही सच्चे और स्थाई सुख एवं शान्ति की जननी है। तो आइये, रक्षाबंधन के इस पावन पर्व पर हम सभी प्रतिज्ञा करें कि अपना सम्बन्ध उस सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा से जोड़कर, मन-वाणी और कर्म से सबको सुख देते हुए आपसी स्नेह और एकता के सूत्र में बंधकर अपने जीवन को पवित्र देव तुल्य महान बनायेंगे ताकि हमारा प्रिय भारत पुन: सारे विश्व का आध्यात्मिक मार्ग प्रदर्शक बन सके।

आपकी दैवी बहन

बी.के. प्रकाशमणि

दादी प्रकाशमणि

1. शिमला (हि.प्र.)- रेडक्रॉस मेले में राज्यपाल महामहिम भ्राता वी.एस. कोकजे का स्वागत करती हुई ब्र.कु. कृष्णा बहन। साथ में हैं अतिरिक्त दण्डाधिकारी भ्राता हुक्म सिंह ठाकुर। **2. पाण्डव भवन (देहली)**- भ्राता जगदीश टाइटलर, केन्द्रीय राज्यमंत्री के साथ ज्ञान-चर्चा करते हुए ब्र.कु. पुष्पा बहन। **3. अगरतला**- त्रिपुरा के राज्यपाल महामहिम भ्राता दिनेश नन्दयाल सहाय तथा श्रीमती सहाय को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई। साथ में हैं ब्र.कु. कविता बहन तथा ब्र.कु. मोसमी बहन। **4. पुणे (चन्दन नगर)**- विश्व विख्यात टेनिस खिलाड़ी भ्राता महेश भूपति को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अंजली बहन। साथ में हैं ब्र.कु. दीपक भाई। **5. बीकानेर**- नवनिर्वाचित सांसद भ्राता धर्मेन्द्र जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. कमल बहन। **6. अकलुज**- महाराष्ट्र के उपमुख्यमन्त्री भ्राता विजयसिंह मोहिते पाटिल जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुरेखा बहन, ब्र.कु. विनायक भाई तथा अन्य। **7. हैदराबाद**- आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री भ्राता डॉ. वाई.एस. राजशेखर रेड्डी जी से ज्ञान-चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में हैं विधायक भ्राता गंगाराम जी, ब्र.कु. मृत्युन्जय भाई, ब्र.कु. सत्यनारायण भाई, ब्र.कु. अंजली बहन, ब्र.कु. कुलदीप बहन, ब्र.कु. मन्जू बहन, ब्र.कु. शीला बहन तथा ब्र.कु. शिवानी बहन। **8. भरतपुर (राज.)**- राजस्थान के चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद मन्त्री भ्राता डॉ. दिगम्बर सिंह जी को बधाई एवं ईश्वरीय प्रसाद देती हुई ब्र.कु. कविता बहन।
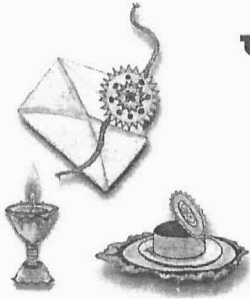
पवित्रता की रक्षा ही सच्चा रक्षाबंधन है

यदि मैं आपको यह बताऊँ कि रक्षा-बन्धन वास्तव में नारी के द्वारा नर की रक्षा का प्रतीक है, न कि नर द्वारा नारी की रक्षा का, तो शायद आप चौंक जायेंगे। परन्तु यह बात अक्षरश: सत्य है। कालान्तर से अपने पर्वों के असली रहस्य को भूल जाना मानव समाज का स्वभाव है। यदि किसी से पूछें कि रक्षा-बन्धन का त्योहार कब शुरू हुआ था तो प्राय: यही उत्तर मिलेगा कि यह तो परम्परा से चला आ रहा है। प्रश्न उठता है कि क्या नारी शुरू से ही अबला रही है? क्या वह सतयुग में भी पुरुषों पर निर्भर थी? सतयुगी अथवा त्रेतायुगी देवी-देवताओं, श्री लक्ष्मी-श्री नारायण, श्री सीता-श्री राम इत्यादि के जो चित्र तथा मूर्तियाँ आज उपलब्ध हैं उनमें स्त्री-पुरुष दोनों ही राजसिंहासन पर विराजमान होते हैं। इतना ही नहीं बल्कि देवियों का नाम देवताओं से पहले लिया जाता है। जैसे कि श्री राधा-श्री कृष्ण, श्री सीता-श्री राम इत्यादि। इससे स्पष्ट है कि स्वर्ण एवं रजत काल में 'यथा राजा-रानी तथा प्रजा' की उक्ति के अनुसार नारियों को पुरुषों से भी अधिक सम्मान प्राप्त था। उस जमाने में धन-पदार्थों का भी इतना बाहुल्य था कि किसी नारी के आर्थिक सहायता माँगने का तो प्रश्न ही न था। भला श्री लक्ष्मी जैसी देवियाँ, जिनसे भक्तजन आज तक धन माँगते हैं, क्या आर्थिक सहायता के लिए अपने भाई को वचनबद्ध करेंगी? उस अमरलोक में अकाल-मृत्यु भी नहीं होती थी जो कोई नारी बाल-विधवा हो जाए और उसे जीवन निर्वाह के लिए आश्रय की ज़रूरत हो।

प्रचलित प्रथा सार्थक नहीं है

सतयुग एवं त्रेता के बाद के जमाने में भी रक्षा-बन्धन के बारे में प्रचलित प्रथा वास्तविक परिस्थितियों पर पूरी नहीं उतरती। आर्थिक रीति से कन्या अपने पिता पर और विवाहित नारी अपने पति पर निर्भर होती है। अपने भाइयों का आश्रयं तो उसे दोनों के न रहने की हालत में ही लेना पड़ेगा। परन्तु सभी के साथ तो ऐसा नहीं होता। तब भला रक्षा-बन्धन की सार्वजनिक रस्म का क्या अभिप्राय है? यदि कहें कि विधवा होने की सम्भावना इसका कारण बनी होगी तो प्रश्न उठेगा कि सती की रस्म के अनुसार तो विधवा नारी अपने जीवन को ही समाप्त कर देती थी। इसके अतिरिक्त पहले लोग संयुक्त परिवारों (Joint Families) में रहते थे। अत: विधवा ससुराल अथवा मायके के संयुक्त परिवार में रहती थी न कि वह केवल अपने भाइयों पर आश्रित होती थी। कई बार बहन का विवाह धनाढ्य परिवार में हो जाता है जबकि भाई निर्धन होता है, जो आवश्यकता पड़ने पर बहन की आर्थिक सहायता कर ही नहीं सकता।

शेष पृष्ठ......27 पर

अमृत-सूची

सात्त्विक भोजन के चार चरण

भारतीय संस्कृति का भव्य भवन मूल्यों और सद्‌गुणों की नींव पर रखा गया है। इन मूल्यों की धुंधली परछाई आज के तमोप्रधान युग में भी, जीवन के हर क्षेत्र में दिखाई दे जाती है। निरन्तर चिन्तन से हम मूल्यों की धुंधली तस्वीर को पुन: चमका कर नव सृष्टि निर्मित कर सकते हैं। हर मानव अपने जीवन में सुख, शान्ति, उच्च कर्म, सद्‌गुण और महानता को पाना चाहता है। इस इच्छा को साकार करने के लिए जहाँ अन्य सात्त्विक आदतों का अनुसरण करना जरूरी है वहाँ भोजन भी एक महत्त्वपूर्ण घटक है। सात्त्विक भोजन सात्त्विक जीवन निर्मित करने के लिए अति अनिवार्य है। किसी भी खाद्य पदार्थ को 'भोजन' का रूप देने तक उसे कई चरणों से होकर गुजरना पड़ता है। ये मुख्यत: चार हैं। इसलिए जहाँ भोजन पकाया जाता है उस स्थान को चौका (रसोईघर) कहने की प्रथा आज भी बरकरार है। चौके के चार चरण निम्नलिखित हैं –

1. पदार्थ की परख, 2. पदार्थ की खरीद, 3. पदार्थ की पाक-विधि, 4. खाने वाले की मनोस्थिति

1. पदार्थ की परख – मन और तन पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर खाद्य पदार्थों को सतोगुणी, रजोगुणी तथा तमोगुणी इन तीन श्रेणियों में बाँटा गया है। फल, सब्जियाँ तथा उचित तरीके से पकाया गया भोजन सतोगुणी माना जाता है। स्वाद को महत्त्व देकर, जीह्वा को रस प्रदान करने के लक्ष्य से, इन्द्रियों के वश होकर खाए जाने वाले, काम-वासना तथा भोगों को भड़काने वाले रजोगुणी खाद्य माने जाते हैं। उत्तेजक, मादक, बासी, बहुत चटपटे, गृष्ठ (देर से हजम होने वाले) सड़े हुए, निद्रा तथा आलस्य पैदा करने वाले, माँस, मछली, लहसुन, प्याज, शराब, तम्बाकू तथा अन्य औषधि-दुर्व्यसन तामसिक श्रेणी में आते हैं। खाद्य-अखाद्य के सम्बन्ध में आजकल बहुत वैज्ञानिक शोध हो रही हैं और मीडिया के माध्यम से सब तक ये जानकारियाँ प्रचुर मात्रा में पहुँचती हैं। शराब, माँस आदि के नुकसान तथा सात्त्विक खाद्य के फायदे - इस सम्बन्ध में विज्ञान-प्रमाणित विस्तृत साहित्य आज उपलब्ध है। खुशी की बात है कि विज्ञान भी सात्त्विक आहार की उत्तमता का समर्थन करता है और तामसिक तथा राजसिक भोजन से होने वाली हानियों के आँकड़े देकर उस प्रकार के सेवन का जोरदार खण्डन करता है। तामसिक पदार्थ व्यक्ति को समय से पहले जर्जर, वृद्ध, रोगी और अकाल मृत्यु का शिकार बनाते हैं। उसके मानसिक सन्तुलन को बिगाड़ते हैं, निर्णय शक्ति को नष्ट करते हैं। उत्तेजना, मानसिक आवेग तथा इन्द्रियों को अनियन्त्रित और दिशाभ्रष्ट करते हैं।

2. पदार्थ की खरीद – भोज्य पदार्थ को खरीदने में किस प्रकार के धन का उपयोग हो रहा है, इससे भी पदार्थ पर सात्विक या तामसिक प्रभाव पड़ता है। पदार्थ की खरीद में यदि चोरी, झूठ, कपट, रिश्वत, धोखे आदि का पैसा लगता है तो वह पदार्थ तामसिक माना जाता है। किसी का जी दु:खा कर, हड़प कर यदि पैसा लाया गया और उसे पेटपूर्ति का साधन बनाया गया तो अनेकों की 'हाय' या बद्दुआ रूपी काली छाया पीछा करती है। यह सत्य है कि पदार्थ जड़ है, उसे शुद्ध या अशुद्ध धन का कोई ज्ञान नहीं है परन्तु अन्याय से पैसे हड़पने वाला अन्यायी मन जब किसी पदार्थ को खरीद कर अपने अधिकार में लेता है तो उसी क्षण से पतित मानसिक प्रकम्पन उस पदार्थ पर कुप्रभाव डालना प्रारम्भ कर देते हैं। प्रकृति मानव के प्रकम्पनों से प्रभावित होती है - यह वैज्ञानिकों द्वारा सिद्ध किया हुआ तथ्य है।

3. पदार्थ की पाक-विधि – जिस स्थान पर भोजन पकाया जाता है वह साफ-स्वच्छ, हवादार तथा प्रकाशयुक्त हो। पकाने के लिए जो राशन लाया जाता है उसमें बाल, कीड़ा, कंकर, तिनके आदि अशुद्धि न हो और वह गला हुआ, बासी, झूठा तथा बदबू वाला न हो। भोजन बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बर्तन तथा कपड़े भी साफ हों। इन स्थूल शुद्धियों के साथ, सूक्ष्म शुद्धियाँ भी बहुत जरूरी हैं जिनमें भोजन पकाने वाले के मन तथा शरीर और कपड़ों की स्वच्छता भी अनिवार्य है। सबको ज्ञात है कि पुराने समय में भोजन पकाने के निमित्त रसोइयों को 'महाराज' कहा जाता था। अब भी यह शब्द प्रचलन में है। वह व्यक्ति किसी स्थान विशेष का अधिकारी होने के कारण 'महाराज' कहलाए ऐसा नहीं है। 'महाराज' कहने के पीछे भाव यही है कि वह अपने मन तथा कर्मेन्द्रियों पर राज्य करता हुआ भोजन पकाता था। आज तो केवल नाम रह गया है परन्तु इन्द्रिय आधिपत्य तो समाप्त ही है। बीते समय में अमीर घरों के इन रसोइयों को तथा सामान्य घरों की नारियों को भोजन पकाते समय एक विशेष प्रकार का कपड़ा पहनना होता था जो बिना सिला होता था। भोजन पकाने के बाद, चौके से बाहर निकलने पर उस कपड़े को समेट कर रख दिया जाता था। इस नियम के पीछे भी स्वच्छता का ही गुप्त राज़ था। उस विशेष वस्त्र को पहन कर वह पाकी न तो घर से बाहर, न पाखाने आदि में, न बच्चों की सम्भाल तथा अन्य प्रकार के कार्यों में हाथ लगा सकता था। इससे उन-उन स्थानों से सम्बन्धित गन्दगी के किटाणु भी उसे नहीं छू पाते थे। जब कोई व्यक्ति पाखाने में जाता है तो उस स्थान के किटाणु उसके कपड़ों से चिपक जाते हैं। अब उन्हीं कपड़ों से वह रसोईघर में या घर के अन्य स्थानों पर जाता है तो वे किटाणु भी उसके साथ-साथ सब जगह अपना गन्दा प्रभाव दिखाते हैं। इस सम्भावना से बचने के लिए ही बिना सिला कपड़ा पहन कर भोजन बनाने की प्रथा थी। इस प्रकार, पाकी व्यक्ति का कपड़ा और शरीर हर प्रकार की अशुद्धि से मुक्त रह जाता था और यह शुद्धि तन को स्वस्थ और मन को प्रफुल्लित रखने में बहुत मदद करती थी। आज शुद्धि के नियमों के प्रति लापरवाही ने ही रोगों को अनियन्त्रित कर दिया है। परन्तु आध्यात्मिक पुरुषार्थ में तीव्र उन्नति पाने के लिए वस्त्रों और शरीर की शुद्धि के साथ-साथ भोजन पकाने वाले के मन के विचारों की शुद्धि भी महत्त्वपूर्ण है। **अन्न पर मन का प्रभाव और मन का अन्न पर प्रभाव सर्वत्र विदित है। कोई भी खाद्य पदार्थ जब आग और पानी के सम्पर्क में आता है तो वह अपने आस-पास के प्रकम्पन भी खींचता है। इस स्थिति में यदि पकाने वाला व्यक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के वशीभूत है, उसके मानसिक संकल्प अस्थिर और विलासितापूर्ण हैं, वह राग-द्वेष द्वारा पीड़ित है, मन में उद्विग्नता या निराशा को लिए हुए है तो ये सब प्रकार के भाव उसके द्वारा पकाए भोजन पर कुप्रभाव डालते हैं। खाने वाला व्यक्ति शनै:-शनै: इन विकारों और विकृतियों का शिकार होता जाता है। इसके विपरीत यदि भोजन बनाने वाले व्यक्ति का मन शुद्ध है, वह निर्विकारी है और ईश्वरीय प्रेम में मगन है, सर्व के प्रति शुभ भावनाओं से भरा हुआ है, सन्तुष्टता तथा निश्चिन्तता का नित्य अनुभव करने वाला है, सृष्टि नाटक के हर दृश्य को साक्षी दृष्टि से देख कर सदा प्रसन्नचित्त रहता है, आसक्ति, तृष्णा, मैंपन से मुक्त सदा जीवनमुक्त स्थिति का आनन्द लेता है तो ऐसा भोजन महाप्रसाद और महाऔषधि तुल्य है। वह खाने वाले के मन में शुद्धि को जन्म देता है, उसकी ईश्वर से प्रीति बढ़ाता है, शरीर को बल तथा आरोग्य और बुद्धि को दिव्यता तथा तेज की प्राप्ति कराता है।**

4. खाने वाले की मन:स्थिति – भारतीय संस्कृति मानती है कि मानव खाने के लिए नहीं जीता, जीने के लिए खाता है। इसलिए भोजन करना भी ऐसा ही है जैसे कि मन्दिर

की मूर्ति को भोग लगाना। इस अनासक्त भाव की धारणा का आधार यह है कि भोजन पहले देने वाले दाता को अर्पण किया जाए। प्यारे शिव परमात्मा को प्यार से भोग लगा कर उनका धन्यवाद करते हुए भोजन स्वीकार किया जाए। यह सही है कि भगवान अभोक्ता हैं, वे भोजन को स्वीकार नहीं करते परन्तु हमारी भावनाओं को स्वीकार करते हैं। भोजन तो निमित्त है, अर्पण तो हमें भावनाएँ ही करनी हैं।

आजकल हम देखते हैं कि अधिकतर लोग पाचन तन्त्र की विविध बीमारियों से ग्रसित हैं। अन्य कारणों के साथ-साथ इसका एक कारण यह भी है कि भोजन चिन्ताग्रस्त, उत्तेजित तथा नकारात्मक मन:स्थिति के साथ स्वीकार किया जाता है। वैज्ञानिक शोध बताती हैं कि शरीर की विभिन्न ग्रन्थियाँ भोजन पचाने के लिए जो स्राव स्रावित करती हैं उनकी मात्रा क्रोध या उत्तेजना के कारण जरूरत से कम या अधिक हो जाती है और परिणामस्वरूप पाचन क्रिया ठीक नहीं होती। ऐसे लोग महसूस करते हैं कि भोजन का गोला पेट में ज्यों-का-त्यों रखा हुआ है। लम्बे समय तक इस स्थिति के बने रहने से उदर में अधिक अम्ल बनना, खट्टी डकारें आना, बाई होना आदि लक्षण उभरने लगते हैं। इसलिए भोजन को ईश्वरीय स्मृति में रह कर निश्चिन्त, प्रसन्न, शान्त और सकारात्मक मन:स्थिति में खाना चाहिए।

ऊपर हमने चौके के जो चार चरण बताए हैं वे आध्यात्मिक तथ्यों को ज्यादा उजागर करते हैं। इनके अलावा भोजन-विज्ञान अन्य भी बहुत सारे पहलू बताता है जो समय-समय पर विज्ञान पत्रिकाओं में पढ़ने को मिलते हैं। परन्तु लेख के कलेवर को ध्यान में रखते हुए हमने अपनी बात संक्षेप में ही कहने का ध्यान रखा है।

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

भोर सुनहरी हम लायेंगे

परमपिता के हम संवाहक, हम ही अलख जगायेंगे।
अंधकार को हम पीयेंगे, भोर सुनहरी हम लायेंगे।।

हममें क्षमता है, प्रतिभा है, प्रभु ने दी है अमृत वाणी।
हममें वह जादूई ताकत, जाग उठे हर सोया प्राणी।।
कालजयी हम कलाकार हैं, कालचक्र धारा मोड़ेंगे।
आत्म-स्मृति, स्वमान जगा कर, हम जन-जन का मन जोड़ेंगे।।
नई वृत्ति से, नई दृष्टि से, नई सृष्टि का सृजन करेंगे,
शुभ संकल्प जगाने को हम, नये गीत मन से गायेंगे।।
अंधकार को हम पीयेंगे, भोर सुनहरी हम लायेंगे।।

हमें पता है सत्य, अहिंसा, त्याग, प्रेम को भूल गये हैं।
रीति-नीति को भूल गये हैं, राजयोग को भूल गये हैं।
अप-संस्कृति झंझावातों में, संस्कृति के अवशेष शेष हैं।
आध्यात्मिकता विस्मृत कर दी, इसीलिए व्याकुल विशेष हैं।
लेकिन होकर के निराश यदि, बैठ गये तो क्या जीवन है,
हम बुलंदियों को छूने को, पंख लगाकर उड़ जायेंगे।।
अंधकार को हम पीयेंगे, भोर सुनहरी हम लायेंगे।।

स्वर्णिम जग-निर्माण करेंगे, यह संदेश सुनायेंगे हम।
शिव-शक्ति, मातृत्व-शक्ति की गौरव गाथा गायेंगे हम।
दैवी संस्कृति लाने को फिर, अब विश्वास जगायेंगे हम।।
ज्ञान-योग को धार, धारणा-सेवा को अपनायेंगे हम।
संस्कार अपने बदलेंगे, फिर इस सारी दुनिया से,
संस्कार परिवर्तन करने को हम आवाज़ लगायेंगे।।
अंधकार को हम पीयेंगे, भोर सुनहरी हम लायेंगे।।

– ब्र.कु. गोपाल प्रसाद मुद्गल, डीग (भरतपुर)

पुरुषोत्तम संगम सृष्टि की आदि रचना के विषय में वैज्ञानिकों की मत

– ब्रह्माकुमार रमेश एन. शाह, गामदेवी (मुम्बई)

प्राय: सभी मनुष्यों को ये जानने की उत्सुकता रहती है कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, मुझको क्या करना है, कहाँ जाना है, कैसे जाना है और ये सृष्टि क्या है? कई मनुष्य ये भी जानते और मानते हैं कि आत्माओं का निर्माण और हमारे सुख-दु:ख का आधार इस सृष्टि की रचना पर है अर्थात् ये सृष्टि कैसे अस्तित्व में आई, उसका रचयिता कौन है, रचयिता ने सृष्टि की रचना कब और कैसे की होगी, सृष्टि का रचनाकार कोई चेतन है या जड़ है अर्थात् सृष्टि की रचना जड़ तत्वों के आधार पर हुई या किसी चेतन सत्ता ने सृष्टि का निर्माण किया? ये सब प्रश्न प्राय: सभी बुद्धिजीवी मनुष्यों के मन में उठते ही रहते हैं और वैज्ञानिक परस्पर चर्चा भी करते रहते हैं परन्तु आज तक किसी ठोस निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाये हैं। इस विषय में विश्व में विज्ञान के क्षेत्र में अनेक प्रकार की मान्यतायें एवं सिद्धांत हैं परन्तु विवेक से देखें तो वे सिद्धांत सत्य नहीं हो सकते हैं। यह वास्तविकता है क्योंकि हमारी रचना से पहले ही सृष्टि की रचना हुई है और यदि सृष्टि की रचना नहीं हुई होगी तो हमारी रचना कैसे हुई होगी क्योंकि हम भी सृष्टि के एक अविभाज्य अंग हैं। हमारी रचना से ही सृष्टि की रचना हुई है। आज तक जितने वैज्ञानिक सिद्धांत बने हैं, वे सिद्धांत नहीं हैं, केवल मान्यतायें हैं। कई वैज्ञानिक सिद्धांत के रूप में अपनी मान्यता दुनिया के सामने रखते हैं और उसे लोग वास्तविकता समझकर सृष्टि के निर्माण के विषय में चर्चा करते हैं अर्थात् सभी सिद्धांत केवल मान्यतायें हैं क्योंकि ये सब रचता और रचना के विषय में किये हुए अनुमान ही हैं। अनुमान और वास्तविकता के बीच जमीन-आसमान का अन्तर है। रचता ही रचना के निर्माण का वास्तविक इतिहास बता सकता है।

सृष्टि के निर्माण के विषय में पाश्चात्य जगत में अनेक प्रकार की विचारधारायें प्रचलित हैं, उन सभी विचारधाराओं के ऊपर प्रकाश डालना हो तो अनेक पुस्तकें लिखनी होंगी परन्तु संक्षेप में इस विषय पर कुछ लिखने का यहां मैं प्रयत्न करता हूँ अर्थात् इन लेखों में पुरुषोत्तम संगमयुग का गहराई में अध्ययन करेंगे।

करीब 500 साल पहले धर्म-सत्ता, राज्य-सत्ता और विज्ञात्सत्ता का दृष्टिकोण सृष्टि की रचना के विषय में एकमत ही था। तब यही मान्यता थी कि इस सृष्टि का अस्तित्व अनादिकाल से है और अनन्तकाल तक रहने वाला है, इसलिए सृष्टि के निर्माण और अन्त के विषय में सोचने-विचारने की आवश्यकता नहीं है। उस समय यह भी मान्यता थी कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य पृथ्वी के चारों ओर परिभ्रमण करता है। यह मान्यता धर्म और विज्ञान में समान थी। किन्तु एक वैज्ञानिक ने यह सिद्ध करके बताया कि पृथ्वी स्थिर नहीं है और सूर्य उसका परिभ्रमण नहीं करता है बल्कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसके चारों ओर घूमती है। उसकी इस बात के कारण धर्म नेताओं और राज्य-सत्ता वालों ने उसको मृत्यु दण्ड दे दिया। बाद में एक दूसरे वैज्ञानिक ने भी यही बात कही कि पृथ्वी सूर्य के

आसपास घूमती है और सूर्य स्थिर है तो उसे भी मृत्यु दण्ड होने वाला था किन्तु उसने मृत्यु दण्ड के भय से अपनी बात को वापस ले लिया और पहली वाली मान्यता कि सूर्य, पृथ्वी के चारों ओर घूमता है, को ही स्वीकार कर लिया, जिसके कारण वह मृत्यु-दण्ड से बच गया।

पाश्चात्य तत्व ज्ञानियों तथा तत्व वेत्ताओं ने भी सृष्टि की संरचना के विषय में विचार किया और ग्रीक के एक तत्व ज्ञानी, जिसका नाम थेल्स (Theles) था, जिन्हें ग्रीक के तत्व ज्ञान का अधिष्ठाता (Father of Greek Philosophy) माना जाता है, उनकी मान्यता थी कि पृथ्वी एक थाली के समान समतल (Flat) है और आज भी थेल्स के तत्व ज्ञान को मानने वाले ऐसा ही मानते हैं कि पृथ्वी थाली के समान समतल है। आज तो विमान द्वारा पृथ्वी की परिक्रमा भी होती है। राकेट द्वारा भी ये बात सिद्ध हुई है, फिर पृथ्वी को थाली के समान समतल मानना कोई महत्त्व नहीं रखता है।

17वीं शताब्दी के मध्यकाल में आयरलैण्ड के ईसाई धर्म के एक नामीग्रामी धर्मगुरु ने एक अजब प्रकार के गणित के द्वारा सिद्ध कर बताया कि सृष्टि का निर्माण 4004 ई.पू. (B.C.) में हुआ था और उन्होंने एक लेख के द्वारा यह भी लिखकर दिया कि वह निर्माण दिवस २३ अक्टूबर, 4004 ई.पू. में हुआ था। उनकी इस गणना के बाद वैज्ञानिकों ने अपने-अपने विचार प्रगट करना आरम्भ कर दिया। कई वैज्ञानिकों ने लिखा कि सृष्टि की रचना 600 अरब वर्ष पहले हुई थी तो किसी दूसरे वैज्ञानिक का मत है कि सृष्टि की रचना 550 अरब वर्ष पहले हुई। एक तीसरे वैज्ञानिक का मत है कि सृष्टि की रचना 50 अरब वर्ष पहले हुई। अब तीनों विचारधाराओं पर सामूहिक रूप से विचार करें तो पता लगेगा कि वैज्ञानिकों का सृष्टि के निर्माण के विषय में कितना मतभेद है। कहाँ 600 अरब वर्ष और कहाँ 50 अरब वर्ष, दोनों के बीच में कितना अन्तर है और लोग इस अन्तर को ऐसा ही समझते हैं कि ये अन्तर आज और कल जैसा ही है। ये तो हुई सृष्टि के निर्माण के समय के विषय में विचारधारायें। अब सृष्टि कैसे रची गई, उसके विषय में भी वैज्ञानिकों में अनेक विचारधारायें हैं, जिनमें मुख्य एक-दो के विषय पर यहाँ विचार कर रहे हैं।

कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि एक बहुत बड़ा विस्फोट हुआ, जिसको वे बिगबैंग थ्यौरी (Bigbang Theory) के नाम से मानते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार आकाश में अनेक प्रकार के असंख्य छोटे-छोटे अणु थे और वे सब अणु आकाश में स्वच्छन्द (स्वैर) घूमते रहते थे। आकाश में घूमते-घूमते वे अणु अपने गुण-धर्मों के आधार पर आपस में मिलने लगे और मिलन से जो अणु संगठित हुए, उनमें गुरुत्वाकर्षण (Gravity) एवं चुम्बकीय (Magnetic) शक्ति का निर्माण हुआ और गोला और बड़ा बनता गया। जब वह गोला बहुत बड़ा हो गया तो वह अपने ही वज़न से फूट गया और एक बहुत बड़ा धमाका हुआ, जिससे उन टुकड़ों के भी टुकड़े होते गये। जो टुकड़े बड़े गोले अर्थात् सूर्य से अलग हुए, उनमें बड़े टुकड़े पृथ्वी, शनि जैसे ग्रह बने और जो छोटे टुकड़े हुए वे चन्द्रमा जैसे उपग्रह बने। यह जो बड़ा गोला, जिससे धमाका हुआ, उसमें अणुओं का संघर्ष होने के कारण बहुत गर्मी थी और वह बड़ा गोला आज भी सूर्य के रूप में पृथ्वी को प्रकाश देता है। जो ग्रह अलग हुए, उनमें एक है पृथ्वी, जिसमें हम निवास करते हैं और उसका उपग्रह चन्द्रमा है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक ग्रह-उपग्रह भी हैं, जो सौर-मण्डल के नाम से जाने जाते हैं। ऐसे अनेक सौर-मण्डल आकाश में हैं, ऐसी कई वैज्ञानिकों की

मान्यता है।

विस्फोट के बाद जो ग्रह अलग हुए, वे समयान्तर में ठण्डे होते गये, जिसके कारण उससे पानी का निर्माण हुआ क्योंकि पहले वह पानी गर्मी के कारण भाप के रूप में था। जब वह भाप ठण्डी हुई तो उसने पानी का रूप धारण कर लिया और पृथ्वी पर एकत्र हो गया, जिससे पृथ्वी पर कहीं सागर और कहीं भूखण्ड अस्तित्व में आये। पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण की शक्ति थी, जिसके कारण भाप और पानी दोनों पृथ्वी पर ही रहे अर्थात् जब वह भाप ठण्डी हुई तो पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के आधार पर पानी संचित हो गया और सागर बन गये। दूसरे ग्रहों में इस भाप को संचित करने की शक्ति नहीं थी, इसलिए वह भाप उड़ गई, इसलिए उनमें पानी नहीं है और पानी के बिना जीवन सम्भव नहीं है, इसलिए दूसरे ग्रहों में जीवन नहीं है। ऐसी वैज्ञानिकों की मान्यता है। फिर भी उसके विषय में जाँच हो रही है। अभी-अभी अमेरिका ने एक राकेट मंगल ग्रह की ओर भेजा था, उसने वहाँ के जो फोटो निकाले, जिनसे वैज्ञानिक मानते हैं कि शायद मंगल ग्रह पर पानी हो सकता है।

नेल आर्म्स स्ट्रांग जैसे वैज्ञानिक, जो स्वयं चन्द्रमा पर पैर रखकर, वहाँ से पत्थर लेकर आये, जिससे वैज्ञानिक लोग ये सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं कि चन्द्रमा, पृथ्वी से ही अलग हुआ एक उपग्रह है। चन्द्रमा, प्रशान्त महासागर से अलग होकर चन्द्रमा के रूप में अस्तित्व में आया है अर्थात् प्रशान्त महासागर चन्द्रमा का जन्म स्थान है। मैं एक हँसी की बात यहाँ लिख रहा हूँ। अमेरिका ने चन्द्रमा से लाये हुए पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़े करके दुनिया के अनेक देशों को दिये। कई देशों ने तो उनको संग्रह करके संग्रहालयों में रखा और कई देशों के भ्रष्ट नेताओं ने उन टुकड़ों के अनेक छोटे-छोटे टुकड़े करके काला बाजार में बेच दिया, जिनको पुरातन चीज़ों के संग्रह के शौकीन लोग करोड़ों रुपया खर्च करके खरीदते हैं और अपने व्यक्तिगत संग्रहालयों में रखते हैं। इस काला बाजारी के कारण चन्द्रमा से लाये गये सच्चे टुकड़ों के साथ-साथ बनावटी टुकड़े भी बाजार में बिकते हैं।

सृष्टि के निर्माण के विषय में एक अन्य विचारधारा भी प्रचलित है, जो बिगबैंग के सिद्धांत से काफी मिलती-जुलती है। उनकी मान्यता है कि एक बहुत बड़ा भारी विशाल अण्डाकार गोला था, जिसके कारण उसका नाम ब्रह्माण्ड रखा क्योंकि वह अण्डाकार था। ये ब्रह्माण्ड अपनी धुरी पर प्रचण्ड गति से घूमता था, जिसके कारण कई ग्रह टुकड़े होकर उससे अलग हो गये और फिर उन ग्रहों से उपग्रह बने। दोनों सिद्धांतों में अन्तर इतना ही है कि बिगबैंग थ्यौरी में मानते हैं कि पहले असंख्य अणु थे, जो स्वछन्द विहार करते थे, फिर वे संगठित होकर गोला बन गये और ब्रह्माण्ड मानने वाले पहले से ही एक अण्डाकार गोला मानते हैं, जिससे अलग होकर ग्रह-उपग्रह बने। इस प्रकार देखें तो एक विघटन से संगठन को मानकर अपनी विचारधारा आरम्भ करता है तो दूसरा संगठित गोला मानकर अपनी विचारधारा आरम्भ करता है अर्थात् एक विघटन से संगठन का सिद्धांत है और दूसरा संगठन से विघटन का सिद्धांत है। ये तो हुई सृष्टि के निर्माण के विषय में पाश्चात्य वैज्ञानिकों की विचारधारा। इस विषय में भारत के तत्व वेत्ताओं की विचाराधाराओं के विषय में अन्य लेख में विचार करेंगे। अब प्रश्न उठता है कि पृथ्वी पर जीव सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ, उसके विषय मे पाश्चात्य वैज्ञानिकों का क्या मत है, उन मान्यताओं के विषय में अगले लेख में विचार करेंगे। ✯✯

अचल बनना है तो व्यर्थ और अशुभ को समाप्त करो।

स्नेह की शक्ति

– ब्र.कु. शीलू, आबू पर्वत

आत्मा के अन्दर अनेक प्रकार की शक्तियाँ हैं। उनमें से स्नेह की शक्ति एक महान शक्ति है। ढाई अक्षर का शब्द - प्रेम अथवा स्नेह कितना शक्तिशाली है? प्रेम इतनी बड़ी शक्ति है जो पत्थर को भी पिघला सकती है। चाहे पहाड़ समान कोई परिस्थिति हो परन्तु प्रेम की शक्ति उसको राई समान तो क्या, पानी जैसा हल्का बना देती है। असम्भव कार्य को भी सम्भव कर सकती है। स्नेह में हम जो चीज भुलाना चाहें वो भूल सकते हैं, जिसको याद करना चाहें वो याद कर सकते हैं, उसमें समा भी सकते हैं। जिसके अन्दर प्रेम की शक्ति होगी उसके अन्दर से सारे वैर भाव समाप्त हो जायेंगे क्योंकि जहाँ प्रेम की शक्ति है वहाँ ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि हो नहीं सकते। जहाँ स्नेह है वहाँ हदों की सभी दीवारें टूट जाती हैं। जातिभेद, रंगभेद, भाषाभेद, प्रान्तभेद, कर्मभेद, तेरे-मेरे के भेद जो कि आज संसार में बढ़ते जा रहे हैं, ये सभी स्नेह की शक्ति से समाप्त हो सकते हैं। जहाँ स्नेह होता है वहाँ दोष दिखाई नहीं देते। स्नेह उन्हें भर देता है, समा लेता है। जिससे स्नेह होगा उसे अवश्य सम्मान दिया जाता है। दिल का स्नेह, बाहर के स्नेह का रूप ले लेता है। एक-दो को सम्मान देना यह हम सबका उत्तरदायित्व है। कहा जाता है कि छोटों को प्यार करो और बड़ों को सम्मान दो लेकिन जहाँ दिल में स्नेह होगा वहाँ सम्मान सबके प्रति होगा। देखा जाए तो स्नेह कोई माँगने की चीज नहीं है। आज हम किसी को कहते हैं कि स्नेह दो, तो क्या स्नेह, प्रेम माँगने से मिल जाते हैं। यह तो दिल की बात है। केवल माँगने से या कहने से मिलने की बात नहीं है। अगर हम किसी को स्नेह देंगे तो वह हमें अवश्य स्नेह देगा क्योंकि दिल से ही दिल मिलता है। अगर हम स्नेह देंगे नहीं और चाहेंगे कि दूसरे हमें स्नेह दें तो कभी नहीं मिलेगा। स्नेह दोगे, प्यार दोगे तो बदले में मिलेगा भी। इस संसार में हरेक स्नेह चाहता है। इन्सान तो क्या प्राणी मात्र भी प्रेम चाहते हैं। प्रकृति भी प्रेम चाहती है। आप किसी पौधे को बड़े प्रेम से सींचो तो वह जल्दी बड़ा होता जायेगा। प्रेमविहीन जीवन नीरस है। जैसे गन्ने के अन्दर से रस निकल जाये तो मात्र छिलके रह जाते हैं। इसी प्रकार, जीवन रसदार तब हो जब उसमें प्रेम की शक्ति हो। परन्तु बड़े दुःख की बात है कि आज प्रेम, विकृत रूप लेता जा रहा है। शरीर से प्रेम, धन से प्रेम, पद से प्रेम, वस्तुओं से प्रेम यह प्रेम का भौतिक रूप है जिसके फलस्वरूप अनेक प्रकार के व्यसन और विकार जीवन में बढ़ते जा रहे हैं। जहाँ स्वयं की देह से प्रेम होगा तो अभिमान पैदा होगा, दूसरों की देह से प्रेम होगा तो काम वासना पैदा होगी। धन से प्रेम होगा तो लोभ वृत्ति बढ़ती जायेगी। पद से प्रेम होगा तो क्रोध बढ़ता जायेगा। आज संबंधों में सच्चा प्रेम खत्म होता जा रहा है। धन के पीछे एक बच्चा अपने माता-पिता की हत्या तक कर देता है, पति भी अपनी पत्नी की हत्या कर देता है। सच्चा प्रेम वास्तव में, निःस्वार्थ, शुद्ध और आत्मा के गुणों से होता है। प्रेम तो हम परमात्मा से भी करते हैं। इसलिए प्रेम कोई बुरी चीज नहीं है। लेकिन विकृत रूप हो जाने के कारण संसार में 'प्रेम' नाम बदनाम हो गया है। भगवान भी हम आत्माओं से प्रेम करते हैं। अगर ईश्वर को हम आत्माओं के प्रति प्रेम नहीं होता तो उनके अन्दर न दया भावना होती और न ही सच्ची सहयोग की भावना होती लेकिन भगवान दयालु हैं, कृपालु हैं, रहमदिल हैं, सब पर समान प्रेम बरसाने वाले हैं। उनके प्रेम को हम कितना अनुभव कर पाते हैं, यह स्वयं पर निर्भर करता

है। ईश्वर तो प्रेम का सागर है। जैसे सागर के पास अथाह जल है लेकिन उससे हम कितना जल ले पाते हैं यह अपने पर निर्भर करता है। छोटा-सा लोटा लेते हैं या गिलास भर लेते हैं या चुल्लू भर ही ले पाते हैं। कम लिया तो यह हमारी कमी होगी लेकिन सागर तो सागर ही है। इसी प्रकार, परमात्मा तो प्रेम के दाता हैं, जो सदा आत्माओं पर प्रेम की वर्षा करते रहते हैं। ईश्वर से हम सच्चा प्रेम रखेंगे, तो ही उनका प्रेम हमें मिलेगा। यहाँ समानता का गुण आकर्षित करता है। दुनिया में कहा जाता है कि समान चीजें विकर्षित करती हैं लेकिन आध्यात्मिक जगत में समानता आकर्षित करती है। अत: आत्मा का परमात्मा की तरफ तब आर्कषण होगा, जब उन जैसे गुण हम आत्माओं में होंगे। परमात्मा पिता शान्ति और सुख का सागर है। उसकी याद से आत्मा अपने में गुणों को धारण करती जायेगी। जैसे सूर्य सबको समान किरणें देता है लेकिन अगर खिड़की बन्द करके रखी हो तो सूर्य घर में प्रकाश देने नहीं आयेगा। इसी प्रकार, अन्तर की आँख खोलेंगे तो आत्मा और परमात्मा की अनुभूति कर पायेंगे अर्थात् प्रेम के सागर में स्वयं को समा सकेंगे, प्रेम विभोर हो सकेंगे। **जिसका ईश्वर से स्नेह होगा वह उस स्नेह में सदा समाया हुआ होगा। उसका सर्व के साथ भी स्नेह होगा क्योंकि परमात्मा की रचना है यह सारी दुनिया। अगर रचयिता से स्नेह होगा तो अवश्य ही उसकी रचना से भी स्नेह होगा। जैसे किसी व्यक्ति से स्नेह होता है तो उसकी हर चीज से स्नेह होता है, इसी प्रकार, अगर हमारा परमात्मा से स्नेह होगा तो उसकी बेहद रचना से स्वत: स्नेह होगा।** ईश्वर के साथ स्नेह होगा तो प्रकृति भी हमारी सेवक हो जाएगी लेकिन वह तब होगी जब हम उसे भी भरपूर स्नेह देंगे। आज इन्सान स्नेह को भूल कर हिंसा को अपना आधार बना चुका है। मनुष्य समझता है कि हिंसा के बल से वह किसी को भी जीत सकता है। बाहुबल से किसी का धन या जमीन तो हड़प कर सकते हैं लेकिन उसका दिल कभी नहीं जीत सकते। अहिंसा ही एक ऐसा साधन है, एक ऐसी शक्ति है जिसके आधार से हम सबके दिलों को जीत सकते हैं। अहिंसा अर्थात् न दु:ख देना और न दु:ख लेना। मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी, प्रकृति आदि को भी दु:ख न दें। भीतर में सबके लिए प्रेम जागृत हो, जड़-चेतन के लिए समान प्रेम हो। यही स्नेह की शक्ति है। लेकिन यह शक्ति तब जागृत होगी जब हम यह सोचेंगे कि हर आत्मा का मुझे कल्याण करना है। कई सोचते हैं कि मुझे किसी का अकल्याण नहीं करना है लेकिन सबका कल्याण तो अवश्य करना है ना। प्रकृति का भी कल्याण करना है। पशु-पक्षियों का भी कल्याण करना है। आत्माओं का भी कल्याण करना है। कैसे करेंगे हम कल्याण ?

प्रकृति कितनी दूषित हो गई है क्योंकि मानव मन के अन्दर अकल्याण की भावना बढ़ती जा रही है। प्रकृति पर भी उसका बुरा प्रभाव पड़ रहा है। अगर हम प्रकृति का भी कल्याण चाहते हैं तो संकल्पों द्वारा शुद्ध प्रकम्पन वातावरण में फैलाएँ। ध्वनि-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण आदि सब प्रदूषणों का मूल कारण है संकल्पों का प्रदूषण। हो सकता है कि हम ध्वनि प्रदूषण पर ध्यान देते हों, हम कहेंगे कि यह साइलेन्स जोन है, यहाँ आवाज न करें लेकिन संकल्प हमारे हर स्थान पर श्रेष्ठ हों, इसका कौन ध्यान देता है ? इसका ध्यान वही देगा जो अन्दर में यह सोचेगा कि मुझे सर्व आत्माओं का कल्याण करना है, चाहे मुझे कोई दु:ख ही क्यों न दे। जरूरी नहीं है कि लोग सुख ही देंगे, दु:ख भी देंगे। लेकिन वे मुझे दु:ख दें और मैं उन्हें दुआ दूँ, यह भी सम्भव है। ऐसे समय हम सोचें कि जब दु:ख देने वाला व्यक्ति अपने कर्म को नहीं छोड़ रहा
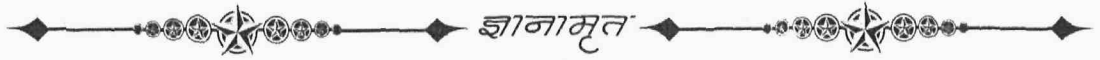
है, तो मैं दुआ देने के अपने कर्म को क्यों छोड़ूँ?

इस पर एक कहानी है कि एक बार पानी में डूबते एक बिच्छू को, एक साधु ने हाथ पर रख कर बाहर निकाला पर बिच्छू ने उसे ही डंक मारा और हाथ से छूट कर पुन: पानी में गिर गया। साधु ने पुन: निकाला, पुन: उसने डंक मारा। देखने वाले एक व्यक्ति ने कहा कि यह क्या, बिच्छू डंक मार रहा है, फिर भी साधु बचाने की कोशिश कर रहा है। तब साधु ने उत्तर दिया कि यह अपना कर्त्तव्य नहीं छोड़ता है तो मैं अपना कर्त्तव्य क्यों छोड़ूँ। इसका कर्त्तव्य है डंक मारना और मेरा कर्त्तव्य है किसी को बचाना। तो मुझे अपना कर्त्तव्य सदा पूरा करना है, चाहे कुछ भी हो जाए। अत: हमें भी धारणा बनानी है कि कोई अगर दु:ख दे तो उसे दुआ दूँ। वास्तव में यह है प्रेम की शक्ति अर्थात् अपकारी पर भी उपकार करना। क्या आज की दुनिया में इस प्रकार की धारणा कोई बनाते हैं? लोग तो यही साचते हैं कि ईंट का जवाब पत्थर से देना है। **लेकिन ईर्ष्यावश, क्रोधवश दु:ख देने वाला सामने होते हुए भी हम उसे दुआ दें, यही तो है प्रेम की सच्ची शक्ति। प्रश्न है कि दुआ कब दे सकेंगे? जब क्षमा कर सकेंगे। ईश्वर क्षमा के सागर हैं। वे क्यों क्षमा करते हैं? क्योंकि वे हम सब आत्माओं के प्रति रहमदिल हैं। रहमदिल भी इसलिए हैं कि वे स्नेह के सागर हैं। तो जहाँ स्नेह है वहाँ रहम है, जहाँ रहम है वहाँ क्षमा है और जहाँ क्षमा है वहाँ सदा देने की भावना है।**

देखा गया है कि ईर्ष्यालु कभी भी स्नेह नहीं दे सकता, ईर्ष्या करने वला सदा जलता रहेगा। स्नेह देना तो दूर, किसी का स्नेह वह अनुभव भी नहीं कर सकता। तो क्यों नहीं हम स्नेह बाँटें। स्नेह का ही प्रसाद सबको दें। स्नेह तब बढ़ता जायेगा जब हम सहनशील होंगे। सहनशीलता इतना महान गुण है कि जिसकी भेंट में अन्य सभी गुण फीके पड़ जाते हैं। सहनशील व्यक्ति निर्माण होगा। नम्र बन कर वह स्नेह देता रहेगा। हम कभी भी स्नेह लेने की कामना न करें। हम यह न सोचें कि पहले मुझे स्नेह मिले फिर मैं स्नेह दूँ। नहीं, चाहे दूसरा दे या न दे, मुझे स्नेह देना है। अगर मैं लेकर के देती हूँ तो ये जैसे कि सौदा हो गया। अगर मैं नि:स्वार्थ भाव से स्नेह देती जाऊँगी तो जो मेरे अन्दर स्नेह है वह कम नहीं होगा। हम औरों को देते जायेंगे और भगवान हमारे भीतर में स्नेह भरता जायेगा। इस प्रकार हम मास्टर स्नेह के सागर बन जायेंगे।

हीरे की कणी

– ब्र.कु. सीता, शक्ति नगर, देहली

जौहरी के हाथ पड़ी तो मैं हीरा बनी।
वरना खान में पड़ी थी मिट्टी में सनी।।
बाबा ने कहा - बच्चे, तुम हो हीरे की कणी।
तुममें छिपी हैं चमकती कलाएँ घनी।।
अभी विकारों से तुम्हारी लड़ाई है ठनी।
अभ्यास से तुम बन जाओगे योगबल के धनी।।
शुद्ध पवित्र विचारों से जब चमकती है मस्तकमणि।
तब समझो कि सारी माया की छाया धराशायी बनी।।
संगमयुग है केसर की क्यारी, कलियुग जैसेकि नागफनी।
सर्वगुण सम्पन्न बन जाओ तो वसुन्धरा स्वर्ग बनी-कि-बनी।

'पत्र' सम्पादक के नाम

जून 04 की 'ज्ञानामृत' पत्रिका में प्रकाशित 'सकारात्मक सोचने की कला' मन के तारों को छू देने वाला है। वास्तव में हम परिस्थितियों को परिवर्तित नहीं कर सकते किन्तु उस मुद्दे को लेकर मन में जो विचारों की हिलोरें उठती हैं उन्हें अवश्य परिवर्तित कर सकते हैं। किसी भी विपरीत परिस्थिति की चुनौतियों को स्वीकार किया जाना चाहिए। हताश होना, निराश होना सकारात्मक सोच नहीं है। जितना भी पाया, उसमें संतुष्टता का भाव रखना ही सकारात्मक सोच की पराकाष्ठा है। लेख की गहराई पाठकों को भी सकारात्मक सोच में समा लेगी।

– बाबू भाई, चिटगुप्पा (कर्नाटक)

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

'ज्ञानामृत' सचमुच हमारे लिए अमृत का काम करती है। जैसे कहा जाता है कि मुरली ब्राह्मणों का श्वास है ऐसे ही मैं यह कहूँगा कि मुरली के साथ-साथ ज्ञानामृत भी ब्राह्मण जीवन का श्वास है क्योंकि जैसे हम तनख्वाह की तारीख को याद करते हैं वैसे ही हम ज्ञानामृत की राह देखते रहते हैं। 'नष्टोमोह:, नष्टोघृणा', 'सकारात्मक सोचने की कला', 'हम गरीब क्यों हैं' ये लेख पढ़ कर हम आत्मा को बहुत अच्छा लगा। इसके साथ-साथ रमेश भाई जी के लेख बहुत अच्छे लगते हैं। ज्ञानामृत हाथ में आते ही मैं रमेश भाई जी का लेख पढ़ता हूँ। सभी ज्ञानामृत के लेख भेजने वालों का शुक्रिया करता हूँ।

– ब्रह्माकुमार गिरीश भाई, नाशिक

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

'ज्ञानामृत' मासिक का जून 04 का अंक मिला। इसे देख कर मैं अपने आपको रोक नहीं सका और एक ही बैठक में पूरा अंक पढ़ कर ही दम लिया। वर्तमान समय में जहाँ एक ओर साहित्य के नाम पर घासलेटी व घटिया साहित्य पाठकों को पढ़ने को मिल रहा है जिससे युवा-पीढ़ी पथभ्रष्ट और दिग्भ्रमित हो रही है, वहीं इतने कम मूल्य में अर्थात् मात्र पाँच रुपये मासिक में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय 'ज्ञानामृत' के द्वारा ज्ञान का अमृत बाँट रहा है। बेहद प्रसन्नता हुई।

यह अंक वास्तव में 'गागर में सागर' लगा। समूचा अंक उच्च कोटि के मार्गदर्शन व ज्ञानवर्धक सामग्री से भरा पड़ा है। अत: किसी एक रचना की सराहना करना दूसरे लेखकों के साथ अन्याय करना ही कहा जायेगा। फिर भी संजय की कलम से - 'तीसरा चक्षु खोलना ही योग है', 'पवित्र धन एवं मातेश्वरी सरस्वती', 'सकारात्मक सोचने की कला', 'समय का महत्त्व' काफी हृदय को छू लेने वाले लगे। छोटी-सी पत्रिका के माध्यम से ज्ञान का अमृत बाँट कर इस विद्यालय के संचालक वास्तव में पुनीत कार्य कर रहे हैं। इसके लिए सम्पादक मण्डल और लेखक बंधु धन्यवाद के पात्र हैं।

आज के समय में मानव समाज को अध्यात्म की अत्यधिक आवश्यकता है। सर्वांगीण विकास के लिए हमें आंतरिक शक्तियों को उजागर करना ही होगा। व्यक्तित्व के विकास के लिए ध्यान, योग जैसी संहिताओं की भी आवश्यकता है। आज भले ही विज्ञान के क्षेत्र में हमने काफी प्रगति कर ली है और प्रगतिशील हैं लेकिन आध्यात्मिकता के क्षेत्र में काफी पीछे रह गए हैं। समय की बलवती माँग है कि आध्यात्मिकता को हम अपने जीवन का एक अभिन्न अंग बनाएँ ताकि सम्पूर्ण विश्व सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर हो। यह सर्वविदित है कि सकारात्मक चिन्तन ही शान्ति का मार्ग है। मन को जब तक दिशा प्रदान नहीं है तब तक मनुष्य ज्ञान रूपी मार्ग को पाने में असमर्थ है। मन की स्थिति ही शान्ति व अशान्ति का अनुभव कराती है। चिन्तन की धारा से ही हम अपनी वास्तविक स्थिति को समझ सकते हैं। अपने विचारों को सही दिशा देना ही सही जीवन है।

– सुनील कुमार माथुर, मेड़ता सिटी

अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस पर ......

खुदा दोस्त का खत

ब्रह्माकुमार पुष्कर, खण्डवा

सृष्टि की समस्त आत्माओ,

मेरे अति मीठे दोस्तो, स्नेह भरा याद-प्यार! मैं तुम्हारे लिए ही परमधाम से इस धरा पर आया हूँ। आज से लगभग 68 वर्ष पूर्व जब मैं प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हुआ तब सिंध-हैदराबाद के कुछ बच्चों ने ही मुझे पहचाना और मुझसे दोस्ती की। मैंने वहीं साथ रह कर उनको बहलाया, पढ़ाया तथा गुणवान बना कर अलौकिक सेवा के योग्य बनाया। उनके द्वारा की गई सेवा के माध्यम से मैंने अपनी दोस्ती और बढ़ायी, हर दिन मेरे दोस्त बढ़ते ही गए, बढ़ते ही गए।

मैं इस धरा पर आकर अपना परिचय स्वयं भी देता हूँ एवं अपने दोस्तों के माध्यम से भी देता रहता हूँ। कभी मैं दोस्ती के लिए आत्माओं को अपने द्वारा स्थापित राजयोग केन्द्रों तथा शाखाओं पर बुलवाता हूँ तो कभी उनके घर, दुकान या कार्यालय में अपना संदेश भिजवाता रहता हूँ। कभी-कभी किसी को टचिंग भी देता हूँ। कभी किसी को साहित्य, पत्रिका आदि के माध्यम से भी परिचय देता रहता हूँ। मेरा लक्ष्य है कि दुनिया की सर्व आत्माएँ यह जान लें कि खुदा इस धरा पर हम आत्माओं से दोस्ती करने के लिए आया हुआ है।
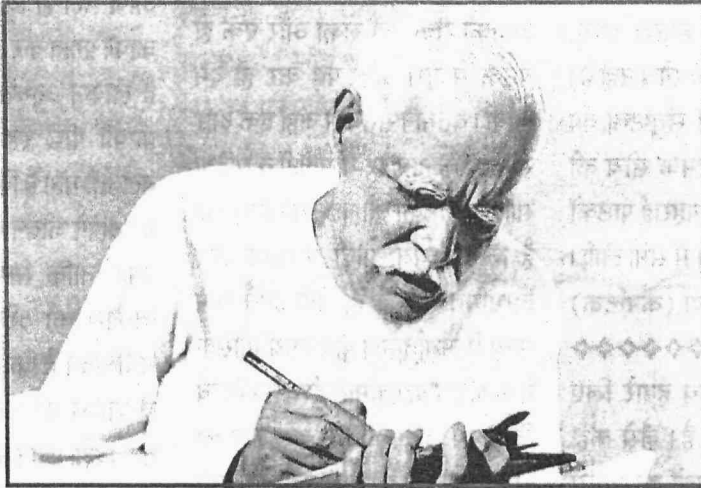
दोस्ती करने के लिए मैं अपना हाथ सदा आगे ही रखता हूँ। चाहे कोई मेरी बात सुने या ना सुने, चाहे सुन कर अनसुनी कर दे। पर मैं तो हमेशा दोस्ती के लिए लालायित रहता हूँ। मेरे दोस्तों का स्वभाव, आदतें आदि एक-दूसरे से भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। सभी एक-समान हो भी कैसे सकते हैं। फिर भी मुझे एक-एक से हार्दिक प्रेम है। हरेक की याद रूपी माला मैं भी फिराता रहता हूँ। उनके प्रेम की भेंट में मेरा पदमगुणा ज्यादा प्रेम है। अपने इस पत्र द्वारा मैं उन सभी को याद भेज रहा हूँ। कितनी ही आत्माएँ मुझसे दोस्ती का पक्का वायदा रोज करती हैं। मुझ पर फिदा हो जाती हैं, पहली मुलाकात में ही मुझ पर अपना सब कुछ समर्पण करने का भरोसा दिलाती हैं परन्तु फिर पलट कर मुँह भी नहीं दिखाती हैं लेकिन मैं तो दोस्ती निभाऊँगा ही, उन्हें चाहे वायदा याद हो या ना हो। मेरे कई दोस्त ऐसे भी हैं जो मुझसे दो-चार बार तो मिलते हैं लेकिन फिर भूल जाते हैं। पर मैं उन्हें नहीं भूलता हूँ। अन्य दोस्तों के माध्यम से संदेश भेजता रहता हूँ क्योंकि मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे जरूर लौट कर मेरे पास आयेंगे ही। मेरे कई ऐसे दोस्त भी हैं जो हर सद्‌गुरुवार को ही मेरे पास आते हैं। उनमें से भी कई तो मुझसे बातचीत करते हैं, मिलते हैं, हालेदिल कहते हैं और कई बस प्रसाद लेकर ही चले जाते हैं। मैं उनसे भी खुश हूँ और आशान्वित हूँ कि पवित्र अन्न उनके

दिल को बदल कर मेरे दिल से मिला देगा। मेरे कई दोस्त स्वयं की इच्छा से कभी नहीं आते लेकिन मेरे बुलाने पर दौड़े चले आते हैं। अपना तन-मन-धन सब लगाते हैं। कभी ना नहीं कहते हैं। हर तरह से मेरे सहयोगी-साथी हैं। वे भी जल्दी-से-जल्दी सहयोगी से योगी बन कर दोस्ती का पक्का कंगन पहन लेंगे। मेरे कितने ही ऐसे पक्के दोस्त थे जो मुझ पर अपनी जान छिड़कते थे। अपना तन-मन-धन-समय-श्वास सब स्वाहा करते थे किन्तु वो भी आज हैं नहीं। मैं तो अभी भी उन्हें अपना पक्का दोस्त मानता हूँ परन्तु वे मुझसे संकोच कर रहे हैं। कई तो मेरे दायें हाथ थे। उन्होंने बहुतों से मेरी दोस्ती करवाई थी। उनके द्वारा मिलवाए गए नए दोस्त तो आज भी मेरे पक्के दोस्त हैं पर वे खुद अब मेरे से रूठे हुए हैं। किन्तु मैं भी हार मानने वाला नहीं हूँ। **मैं भी किसी-न-किसी बहाने से उन तक अपना संदेश भिजवाता रहता हूँ और मुझे विश्वास है कि आज नहीं तो कल वे लौट कर आयेंगे ज़रूर।** मेरे ऐसे दोस्त भी हैं जो खुद तो मुझ से दोस्ती नहीं करते हैं परन्तु औरों को मेरा दोस्त बना कर उन पर रहम करते रहते हैं। उम्मीद करता हूँ कि वे खुद भी एक दिन अपने पर रहम अवश्य करेंगे। कई ऐसे भी हैं जो कहने को तो मेरे दोस्त हैं परन्तु दोस्ती करते नहीं। वे मेरे से मिलने रोज आते हैं, मेरी सुनते भी हैं, पर अपने में कोई परिवर्तन नहीं लाते हैं। वे आज भी वैसे ही हैं जैसे कि पहले थे। लेकिन मुझे पूरी उम्मीद है कि मिलते रहेंगे तो परिवर्तित हो ही जायेंगे।

मेरे कई दोस्त मेरी सुनते तो हैं परन्तु उसमें अपनी भी मिक्स कर देते हैं। कई तो मेरी सुनते ही नहीं वरन् मेरे को ही सुनाते रहते हैं। **कई, सिर्फ मेरी ही सुनते हैं और किसी की भी नहीं सुनते हैं। न दूसरों की और न अपने मन की। ऐसे दोस्त ही वास्तव में मेरे सच्चे दोस्त हैं और ऐसे दोस्तों पर ही मैं अपनी जान छिड़कता हूँ। यही मेरी आशाओं के दीपक हैं, मेरी आँखों के तारे हैं, ऐसे ही दोस्त मेरी प्रत्यक्षता करेंगे।**

अच्छा दोस्त, मित्रता दिवस पर नई-नई आत्माओं को मेरा परिचय देकर दोस्त बनाओ। आज के दिन कुछ मिनिट का समय निकाल कर यह भी जरूर चेक करो कि तुम मेरे कौन-से दोस्त हो और कैसे तुम मेरे दिलतख्तनशीन मित्र बन सकते हो।

तुम्हारा अपना, खुदा दोस्त

इसे राखी कहते हैं

बाँधते रहे डोरियाँ तुम कलाइयों पर, रखते रहे उम्मीदें गरीब भाइयों पर।
पर हम तो सजते हैं दिव्य गुणों के गहनों से, बन के बिन्दी, आत्मा के नैनों से,
हरेक को आत्म-रूप से तकते हैं, सदा विकारों से बच के रहते हैं।
हम तो इसे ही राखी कहते हैं।।
रखते हैं दृढ़ उम्मीदें देव बनने की, भ्रातृ भाव और मर्यादा पर चलने की।
जन-जन में भाई-भाई की दृष्टि से, परमपिता शिव की स्मृति से,
पावनता का संकल्प दृढ़ करते हैं।
हम तो इसे ही राखी कहते हैं।।
न जाति-भेद, न धर्म-भेद, न मत-भेद, शान्ति स्थापना का कंगन लेकर,
दिलखुश मिठाई सब को देकर, सदा शान्त भाव में रहते हैं।
हम तो इसे ही राखी कहते हैं।।
न कुछ संग लाए, न ले जाना है, करना तेरा-मेरा, यह खेल बचकाना है।
अब तो परमात्म-रक्षा के बन्धन में बँध के,
लक्ष्य स्व-परिवर्तन का मन में धर के,
हर पल जग परिवर्तन का जश्न मनाते हैं।
हम तो इसे ही राखी कहते हैं।।

–ब्रह्माकुमार सुरेश भाई, कोटा

बचपन की भूल, वृद्धावस्था की शूल

– ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

खाँसते-खाँसते, फेफड़े की पीड़ा से वृद्ध रामखरे बुरी तरह कराह उठा। चारपाई पर ही बैठ कर उसने दोनों फेफड़ों को जोर से दबाया, कुछ राहत मिली पर गला पूरी तरह शुष्क हो गया था। उसे एक कप गर्म-गर्म चाय पीने की जोरदार इच्छा हुई परन्तु घड़ी को देखते हुए इस इच्छा को भूल जाने और दबा देने के सिवाय कोई चारा उसे नजर न आया। अभी चार बजे थे और बहू के रसोई में आकर बर्तन खड़खड़ाने में पूरे 3 घण्टे बाकी थे। उसने निद्रा देवी से प्रार्थना की कि इन तीन घण्टों में वह उसे अपनी गोद में ले ले ताकि घड़ी की टिक-टिक गिनती करने से वह छूट जाए परन्तु बिना पुण्यों के मनचाही नींद और मनचाही मौत कहाँ मिलती है।

जब नींद दुलारने से मना कर दे, चैन छोड़ कर भाग जाए तो आदमी के पास अतीत के पन्ने टटोलने और वर्तमान को कोसने के सिवाय कुछ नहीं बचता। रामखरे भी अतीत की गलियों में भटकने लगा जिनमें आज से भी ज्यादा अन्धकार था। बचपन से ही यार-दोस्तों के गलत संग के कारण उसे बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू की लत लग गई। बाद में, जवानी का जोश, सिर पर माता-पिता के साए का अभाव, आवारा दोस्तों का गलत संग और भाइयों का स्वार्थी स्वभाव इन सब बातों ने उसे शराब, सिनेमा तथा अन्य बुरी आदतों में अल्पकालिक सुख ढूँढ़ने का आदी बना दिया। दसवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर भी वह प्रेरणा और अपने मनोबल के अभाव में आगे नहीं पढ़ सका और शहर जाकर भाई के व्यापार में हाथ बँटाना प्रारम्भ कर दिया। जड़ों में खाद न पड़ने से जैसे पौधा कमजोर और पीला रह जाता है उसी प्रकार बाल्यकाल से नैतिकता की घूँटी न मिलने से और किसी को नैतिक आचरण करते न देख पाने से रामखरे भी, समाज के व्यवहार की आँधी ने जैसा झौंका दिया, उसी अनुसार उड़ता चला गया। जवानी के जोश में पाँव भी फिसले और एक विवाहित स्त्री से दिल लगा बैठा। शराब, तम्बाकू का सेवन, अनैतिक विषयी सम्बन्ध और चरित्रहीन मित्रों के संग ने उसे क्रोधी, अहंकारी, अन्यायी, निर्दयी, लापरवाह, नास्तिक और बड़बोला बना दिया। भाई उसे कब तक सहन करते, इसलिए शादी करके अलग कर दिया। रामखरे चाहता तो अपनी भक्तिपरायण पत्नी हरिया के साथ शान्ति का जीवन जी सकता था परन्तु 22 साल की आयु तक उसने विकर्मों के जो गहरे गड्ढे खोदे थे वे हरिया की भक्ति, सच्चरित्रता, सात्विकता और मितव्ययता से भी न भरे जा सके।

पुरुष प्रधान समाज ने इन्द्रिय लोलुपता, चंचलता, अमर्यादा, क्रूरता और अहंकार से भरे पुरुष को जो हथियार प्रदान किए हैं वे सब रामखरे के पास भी थे और उन हथियारों का प्रयोग अब आए दिन वह हरिया पर करने लगा। नशें में धुत रामखरे आधी रात तक घर में आता। हरिया बेचारी उनींदी, बच्चों को छाती से चिपकाए बाट जोहती रहती। फिर मोटी-पतली रोटी के नाम पर या कम-ज्यादा नमक की आड़ में हर रोज रामखरे की लात-घूँसों की शिकार होती। इस रावण-काण्ड को निपटने में 2.00 बज जाते, तब कहीं वह सिसकती हुई, बच्चों के साथ बिस्तर में मुँह छिपा पाती। उठते ही फिर रामखरे की गालियों की बौछार शुरू हो जाती। रामखरे एक ऐसा ज़हरीला साँप बन गया था जिसका प्रतिदिन बनने वाला

ज़हर सारा-का-सारा हरिया और बच्चों पर ही उगला जाता था।

बच्चों की फीस की तंगी, दूध और सब्जी की तंगी, कहीं आने-जाने में किराए की तंगी, मेहमानों के आने पर बिठाने, खिलाने की तंगी, बीमारी में दवा की तंगी - जीवन के हर पल में तंगी को देखते-देखते हरिया की आँखें पथरा जाती थीं। पर उसकी भक्ति ने उसे धीरज और सहनशीलता का अमृतरस पिला कर जिन्दा रखा हुआ था। बच्चे पिता के क्रोधी स्वभाव से धीरे-धीरे अवगत होते जा रहे थे और उनके मन में पिता के लिए नफरत का बीज पनप कर वट वृक्ष का रूप लेने लगा था।

रामखरे भविष्य से पूर्ण बेखबर था। हरिया बहुत समझाती थी - ''शरीर में सदा बल नहीं रहेगा। ये सब नशे दीमक की तरह शरीर को खा रहे हैं। शरीर खोखला हो रहा है। आज तो आपकी एक आवाज पर तीनों बच्चे दौड़े चले आते हैं, चाहे भय से ही सही। पर आगे ऐसा समय आएगा कि इनमें से एक का मुँह देखना भी मुश्किल हो जाएगा। आज आपका खा रहे हैं, कल जब अपना कमाने लगेंगे तो इनका प्रेम, प्रतिशोध की भावना में बदल जाएगा। गिन-गिन कर आपकी कमियों का बखान करने लगेंगे। अपने वर्तमान से बुढ़ापे को नरक न बनाओ। वर्तमान जीवन में ऐसे रंग भरो जो उन्हें देख बुढ़ापे में आपकी आँखें शीतल हों। आज तो मैं हूँ, सबकुछ सहन कर लेती हूँ पर भविष्य में यह सब नहीं हो पाएगा ...'' हरिया की इस सच्ची सलाह पर रामखरे जोर से चीखता था, उसको शक्की, बद्मिजाज आदि उपाधियाँ देकर अपने हर कार्य के सही होने की जोरदार पैरवी करता था। उसकी अन्तरात्मा उसे कभी-कभी धिक्कारती थी और कभी वह महसूस भी करता था कि हरिया बड़े स्नेह से भगवान की महिमा गाती है और मैं शुद्ध आत्मा हूँ, मैं पवित्र आत्मा हूँ, परमात्मा शिव की सन्तान हूँ, ऐसे मन-ही-मन स्मरण करती है। उसे इन बातों में कहीं बुराई नजर नहीं आती थी परन्तु उसका अहंकार उसे अच्छाई स्वीकार करने ही नहीं देता था। इसलिए अच्छी बातों पर भी वह घुड़क पड़ता था और हरिया को भी श्रेष्ठ चिन्तन से हटाने की कोशिश करता था परन्तु प्रभु के सच्चे प्रेमरस में डूबा हरिया का मन रामखरे की आदतन घुड़कियों से प्रभावित नहीं होता था। हरिया का सम्पर्क प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से हो गया था। उसने ज्ञान-योग के बल से दु:ख में सुख ढूँढ़ने की तरकीब सीख ली थी। उसने रामखरे को भी ज्ञान में चलने की कई बार प्रेरणा दी परन्तु रामखरे ने हरिया की कोई बात नहीं सुनी। पूरे 32 साल रामखरे के घर की खुली जेल काट कर, उस कसाई के कुकर्मों की पैनी तलवार के घाव प्रतिपल सहती हुई, मात्र 52 साल की आयु में वह हृदयाघात से मर गई। प्रतिदिन की उत्तेजना, भय और चिंता ने उसके हृदय को समय से पहले नाकाम कर दिया था।

रामखरे ने ऊपरी मन से लापरवाही दिखाते हुए अफसोस नहीं जताया परन्तु घर के माहौल में जैसे भूकम्प आ गया। जो बच्चे माँ के पल्लू से बँध कर, इकट्ठे दु:ख, सुख बाँट लेते थे वे सब-के-सब बिखर गए। बच्चियाँ ससुराल चली गईं और बहू अपने बच्चों में व्यस्त रहने लगी। नशों के अलावा रामखरे ने कभी किसी से प्यार किया ही नहीं था तो अब उसे प्यार कौन देता। उसके कमरे में तम्बाकू का धुआँ भरा रहता जो उसका बाल्यकाल का साथी था। बहू ने अपने बच्चों को उसके कमरे में जाने से मना कर दिया। वह स्वयं भी वहाँ प्रवेश करने से कतराती थी। रामखरे को खाँसी की शिकायत रहने लगी और एक दिन चेकिंग कराने पर उसे दमे का रोगी पाया गया। तम्बाकू, शराब जबरदस्ती छोड़नी पड़ी। बहू की दूरी और अधिक बढ़

गई। उसे भय लगने लगा कि ससुर के हाथ लगने से और इसके श्वास की चपेट में आने से मैं, पति और बच्चे भी दमे के रोगी हो सकते हैं। उसने वृद्ध का अन्दर आना, रसोई की किसी चीज को छूना बन्द करा दिया। बेचारा रामखरे, पानी के एक गिलास और चाय के एक कप के लिए भी मोहताज हो उठा। एक वो समय था जब उसकी पदचाप पर इसी घर का कण-कण स्थिर हो जाता था और आज भी घर वही है पर रामखरे की आवाज, कराह और दु:ख को सुनने वाला कोई नहीं है। रिश्तेदार भी 2-4 दिन से ज्यादा उसे झेल नहीं पाते हैं और पुन: वह परकटे पंछी की तरह इसी कमरे रूपी आजीवन पिंजरे में कैद हो जाने के लिए मजबूर हो जाता है।

बर्तनों के गिरने की आवाज ने उसके ध्यान को भंग किया। उसे चैन की श्वास आई कि शायद बहू रसोई में आ गई। परन्तु नहीं, खिड़की से एक बिली तेजी से भागती नजर आई जिसने रात के झूठे बर्तनों को खड़खड़ा दिया था। अभी तो केवल 5:50 बजे थे। रामखरे की आशा पुन: निराशा में बदल गई। गर्दन पुन: लुढ़क गई और गर्म-गर्म आँसुओं की बूँदें उसके गालों पर लुढ़क पड़ी। उसे हरिया की और बच्चों के निर्दोष बचपन की धुँधली तस्वीरें आँसुओं में झलकती दिखाई दी। रामखरे का मस्तक झुक गया और अस्पष्ट बड़बड़ाहट होठों से निकली - **"हे प्रभु! इस संसार में कोई भी जवानी के पापकर्मों से बुढ़ापे को मेरी तरह नरक न बनाए। मैंने शरीर, सम्बन्ध, शान्ति, प्रेम, अपनापन और विश्वास सबकुछ तम्बाकू और शराब की भेंट चढ़ा दिया। आज मेरे पास पीड़ा, पश्चाताप और सबकी नफरत झेलने के सिवाय कुछ नहीं बचा।"**

भगवान की प्रार्थना से उसे राहत मिली और आँख लग गई। सुबह के सात्विक समय में उसे अर्धखुले नेत्रों से एक तेजस्वी छाया दिखाई दी। रामखरे को लगा कि शायद हरिया ही देवी बन कर आई हो। उसने उसके वरदानी हाथ और प्रकाशमय चेहरे को गौर से देखा। उसके हाथ में ज्योतिस्वरूप परमपिता परमात्मा शिव का चित्र था। उसने इशारे से रामखरे को उस ज्योति स्वरूप पिता की शरण में जाने का इशारा दिया और लुप्त हो गई। रामखरे ने आँखें खोली। उसे वही मन्त्र याद हो आया जिसे उसकी पत्नी स्मृति में रखने की शिक्षा देती थी। उसके होठों से - 'मैं शुद्ध आत्मा हूँ, परमात्मा की सन्तान हूँ' अनवरत गति से उच्चारण होने लगा। उसे महसूस होने लगा कि सबकुछ लुट जाने पर उसकी अज्ञान तन्द्रा टूटी है। अब पश्चाताप के सिवाय उसके पास है ही क्या? लेकिन पश्चाताप की सच्ची अग्नि भी पापों की अग्नि से बचा लेती है, यह सोच उसे थोड़ी राहत मिल रही थी।

इंदौर (छावनी)- सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित '**सशक्त नारी सुखी परिवार**' – विषय पर परिचर्चा कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बहन डॉ. निशा दुबे, बहन रीतू ग्रोवर, बहन वीणी साहनी, ब्र.कु. हेमलता, ब्र.कु. सुमित्रा बहन तथा ब्र.कु. अमिता बहन ।

अणु बम से विनाश – पुराने दिनों की याद

– ब्रह्माकुमारी ऊषा, गामदेवी (मुम्बई)

हिरोशिमा-नागासाकी नाम के जापान के दो शहर आज विश्व में प्रसिद्ध हो गए हैं। उनमें भी हिरोशिमा ज्यादा प्रसिद्ध है क्योंकि विश्व में पहले अणु बम का निशाना यह शहर बना। उस शहर पर 6 अगस्त 1945 के दिन प्रात: 8:15 पर अमेरिका द्वारा अणु बम डाला गया। उसका वजन 4 टन था, वह तीन मीटर लम्बा था और उसमें 50 किलोग्राम यूरेनियम भरा था। यह अणु बम हिरोशिमा के जिस इलाके में गिरा उसका नाम था 'हायपोसेन्टर' और परिणामस्वरूप उसके आस-पास के 2 किलोमीटर घेरे में जितने भी मकान थे उनका सर्वनाश हो गया और एक मिनट में ही एक लाख चालीस हजार लोग मर गए। कई बहन-भाई रास्ते में चल रहे थे और चलते-चलते ही जल मरे। अणु बम जब गिरा तब ऐसे लगा जैसे कि आग का गोला आकाश से गिरा है और सर्वत्र असह्य उष्णता का वातावरण बन गया। लोहे को पिघलाने के लिए 1500^{0}C के उष्णतामान की जरूरत पड़ती है और इस अणु बम के कारण वहाँ 2000^{0}C का उष्णतामान निर्मित हुआ। वह बम एक जलते हुए सूर्य की तरह आकाश में दिखाई दिया। आज भी उस शहर के वातावरण में, संवेदनशील और भावनाप्रधान लोगों को लाखों मनुष्यों की अन्तिम समय की चीखें 'मर गया रे...मर गया रे....' अनुभव होती हैं।

वहाँ पर पीस मेमोरियल (Peace Memorial) और हिरोशिमा पीस पार्क (Hiroshima Peace Park) बनाए हुए हैं जिसमें दिखाया गया है कि बम गिरने से पहले वह शहर कैसा था और बाद में कैसे कब्रिस्तान में बदल गया। मानव इतिहास में, चन्द मिनटों में लाखों लोगों के मर जाने का यह एक अनोखा रिकॉर्ड है। यह रिकॉर्ड कोई न तोड़े, यह हमारी शुभ आशा है। उस संग्रहालय में बम के कारण जली हुई चीजों का प्रदर्शन किया हुआ है। गौतम बुद्ध, जो शान्ति के प्रतीक हैं उनकी बम के कारण पिघली हुई मूर्ति भी रखी हुई है। एक नमूने के रूप में एक आधी जली हुई साइकिल भी रखी हुई है। लोगों के जले हुए वस्त्र और उनकी राख भी रखी हुई है। हज़ारों मनुष्य एक सेकेण्ड में कैसे जल मरे, इसका भी वर्णन चित्रों आदि के द्वारा किया गया है। बम 1945 में गिरा किन्तु उसके 30 साल बाद, सन् 1975 में भी करीब 100 लोग बम के अणुरज अर्थात् उसके जो रेडिओ एक्टिव कण हवा में थे उनके कारण मर गए। युद्ध के कारण हिंसा तो होती ही रहती है। विश्व के रंगमंच के ऊपर अनेक युद्ध हुए हैं और उनके कारण हिंसा और क्रूरता उसी समय और बाद में भी होती रही है। इराक में युद्ध हुआ और अब भी वहाँ पर युद्ध के नाम पर हिंसा हो रही है। आज भी लोग हिरोशिमा और नागासाकी में हुए संहार से सीख लेने के लिए तैयार नहीं हैं। कुवैत, अफगानिस्तान, इराक आदि-आदि देशों में अभी तक हिंसा का वायुमण्डल बना हुआ है। जापान की सामाजिक प्रणाली के बारे में एक लेखक ने बताया है कि वहाँ के कानून के हिसाब से वृद्ध माता-पिता की पालना करने की जिम्मेवारी बड़े बेटे के ऊपर होती है। जापान की बहनें बड़े बेटे से शादी करने के लिए तैयार नहीं होती। क्योंकि वृद्ध माता-पिता की सेवा करनी पड़ेगी। विज्ञान की दुनिया में हिरोशिमा पर गिरे हुए अणु बम को 'Little Boy' अर्थात् छोटा बच्चा के नाम से लोग जानते हैं। अब तो उससे हज़ार गुणा शक्तिशाली अणु बम, हाइड्रोजन बम निर्मित हो चुके हैं। ऐसे बम जब गिरेंगे तब का दृश्य और मृत्यु कितनी भयानक होगी इसकी कल्पना मैं पाठकगण के ऊपर ही छोड़ देती हूँ। इसलिए शिव बाबा कहते हैं कि **"हे बच्चे! विनाश की तैयारी तो हो चुकी है, वह आप बच्चों के कारण रुका हुआ है। आप बच्चे जल्दी-जल्दी सम्पूर्ण बन जाओ।"** तो क्या हम अपने सम्पूर्ण बनने के पुरुषार्थ की रफ्तार को बढ़ायेंगे?

***

टूट गई भ्रान्ति

– मधु जेसवानी, जनकपुरी (नई दिल्ली)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के बारे में जानती तो बचपन से थी किन्तु सब तरफ यह शोर था कि ये ब्रह्माकुमारियाँ किसी मायावी दुनिया की परियों की तरह हैं। ये दुनिया से दूर कर देती हैं। यही भ्रान्ति मुझे इनके समीप जाने से रोकती रही। कितनी बड़ी विडम्बना है! एक कल्याणकारी संस्था के बारे में ऐसी भ्रान्ति! खैर, जीवन अपनी गति से चलता रहा। मैं केन्द्र सरकार के एक कार्यालय में अच्छे पद पर कार्यरत थी। घर और कार्यालय में व्यस्त जीवन चलता रहा किन्तु अब मैंने सेवानिवृत्ति ले ली है। दो वर्ष पूर्व अपने घर के निकट के ब्रह्माकुमारी केन्द्र की निमित्त बहन से मेरी मुलाकात हुई। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में शोभायात्रा आयोजित की गई थी। मुझे इसकी जानकारी मिली। मुझे भी इस विषय में रुचि थी और इस प्रकार मेरी पहचान बहनों से बढ़ती गई।

कुछ समय बाद ब्रह्माकुमारी बहनों की तरफ से मुझे माऊण्ट आबू में महिलाओं के एक सम्मेलन में भाग लेने का निमन्त्रण मिला। मैंने खुशी से यह निमन्त्रण स्वीकार किया। अपनी कुछ सखियों से भी मैंने माऊण्ट आबू चलने को कहा। कुछ ने व्यस्तता के कारण और कुछ ने इस संस्था के प्रति डर के कारण मना कर दिया। मैंने इसे चुनौती के रूप में स्वीकार किया और अपने इंजीनियर पति तथा पुत्र के साथ बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करने माऊण्ट आबू पहुँची। चार-पाँच दिन हम वहाँ रहे और इन दिनों में मैंने वहाँ का गहन अध्ययन किया। बहुत सारा साहित्य एकत्रित कर, कुछ उसे पढ़ कर और कुछ पूछ-पूछ कर अपनी जिज्ञासा शान्त की। वहाँ सम्मेलन में भारत के विभिन्न राज्यों, शहरों से सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक क्षेत्र की प्रमुख बुद्धिजीवी महिलाएँ आईं थीं। अनेक विषयों पर विचार गोष्ठियाँ आयोजित की गई। आत्मा, परमात्मा का ज्ञान कराया गया। राजयोग के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। यह भी बताया गया कि आत्मचिन्तन करने से शारीरिक एवं मानसिक कष्टों से मुक्ति प्राप्त करने के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति भी होगी। सबसे महत्त्वपूर्ण विषय, जिस पर मानव समाज को और हममें से प्रत्येक को विचार करना चाहिए वह है मूल्यों के सम्बन्ध में जागरुकता। वहाँ सत्य, सहयोग, सहनशीलता, समर्पण, त्याग, नम्रता, भाईचारा, एकता आदि सभी गुणों पर चर्चा हुई तथा प्यार की शिक्षा भी दी गई। यदि हम मूल्यों पर ध्यान दें तो जीवन में परिवर्तन आ सकता है। जिस सतयुग की बात आज की जा रही है वो मूल्यों के विकास से सम्भव है। आप विचार करके देखिए और सतयुग का इतिहास जानने की कोशिश कीजिए तो पायेंगे कि तब मानवीय मूल्य सम्पूर्ण थे। ज्यों-ज्यों इनके कम होने की प्रक्रिया शुरू हुई, जीवन में सुख-शान्ति का कम होना भी शुरू हो गया। आज के युग में मूल्यों की कमी के कारण ही जीवन दु:खमय हुआ है।

एक सुखद और सुन्दर बात इस विश्व विद्यालय में यह देखने को मिली कि यह पूरे-के-पूरे परिवारों को साथ लेकर चल रहा है। वहाँ पुरुष भी सहयोग की भावना से काम कर रहे हैं। निश्चय ही सब दिव्य गुणों वाले मानव हैं। इस संस्था की वरिष्ठ बहनों को, दादियों को सभी सम्मान व प्यार देते हैं तथा ये सब दादियाँ भी संयुक्त परिवारों की याद दिलाती हैं और एक सुखद अनुभूति से मन भावविभोर हो उठता है। यहाँ सभी वरिष्ठजन पूरे परिवार को अपने स्नेह से पोषित करते हैं। मुख्य रूप से दादियाँ ऐसे कर्त्तव्यों का निर्वाह कर रही हैं। जब उन्हें सूचना मिलती

है कि उनके परिसर में इतने अतिथि पहुँच गए हैं तो वे सब खुश होती हैं तथा सभी आगन्तुकों से शाम को सभागार में मिलने आती हैं। अच्छी-अच्छी, प्यारी-प्यारी ज्ञान भरी बातें करती हैं और प्रसाद देती हैं। ईश्वरीय सौगात देकर एक-एक आने वाले अतिथि से व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करती हैं। वास्तव में, यह महान कार्य सराहनीय है और दादियाँ बधाई की पात्र हैं। इस कार्य से भावनात्मक जगत पोषित होता है। दादियाँ राजयोग की बातों को सरल शब्दों में समझाती हैं कि आत्मा का निवास भृकुटि के मध्य है जहाँ तिलक या बिन्दी लगाई जाती है। अब मन रूपी घोड़े की लगाम काबू कर परमधाम की यात्रा करना बहुत जरूरी है क्योंकि परमधाम ही हमारा असली घर है। चाँद, सितारों से दूर प्रकाश की दुनिया में बिना किसी मेहनत के पहुँचा जाता है। कितना सुखद है यह सब। कोई कठिन कार्य नहीं है, बस स्मृति का बटन दबाने की ज़रूरत है। जहाँ तिलक लगाते हैं वहाँ ध्यान एकत्रित करो (आत्मा के निवास स्थान पर) और पहुँचो परमात्मा के पास। मन की गति की कोई सीमा नहीं, एक सेकेण्ड में पहुँचा देता है। कितना सुन्दर अनुभव सरल शब्दों में दादियाँ समझा देती हैं। यही सब अनुभव लेकर मैं दिल्ली लौट आई और आनन्द का अनुभव करती रहती हूँ।

अनुभूतियाँ

आबू पर्वत जाने से पहले मेरे मन में अनेक प्रश्न उठते रहे। मैं बहनों से वहाँ के बारे में पूछती तो वे यही कहती कि समझो, मायके जा रही हूँ। **वहाँ जाकर कल्पना से बढ़ कर पाया। सब भ्रान्तियाँ तिरोहित हो गई। यह मेरा अनुभव है कि वहाँ की एक-एक तरंग, एक-एक प्रकम्पन अति पवित्र है।** आबू पर्वत राजस्थान का एक पर्वतीय स्थल है। यहाँ बसा ब्रह्माकुमारी मुख्यालय तो धरती का स्वर्ग है। वहाँ की व्यवस्थाएँ, **वातावरण, स्वच्छता और अनुशासन बहुत ही पसन्द आया। मधुबन, ज्ञान-सरोवर पूरी की पूरी व्यवस्था एक अलग दुनिया के रूप में परिपूर्ण है। मनोरंजन का भी पूरा-पूरा ध्यान - बाबा की छोटी-बड़ी गाड़ियाँ संस्था द्वारा नि:शुल्क सभी अतिथियों को दिलवाड़ा के जैन मंदिर तथा अन्य दर्शनीय स्थलों पर घूमाने ले जाती हैं। प्रकृति की गोद में बैठ जीवन की थकान को दूर करने का सुन्दर अवसर प्रदान करती हैं। परिसर में ही सरोवर, बाग, बगीचे, प्रदर्शनियाँ, सब सुविधाओं का अनुभव तथा पूरे भारत से आए भाई-बहनों का भाईचारा, ये सब सुन्दर अनुभव रहे।**

भोजन की व्यवस्था का वर्णन करना भी अति आवश्यक है और ऐसी सुन्दर व्यवस्था से कुछ सीखना हम सबके लिए जरूरी भी है। भोजन कराने के बड़े-बड़े कक्ष हैं जिनमें 800-1000 मेज-कुर्सियाँ सभी मेहमानों के लिए हैं। भोजन परोसने के निमित्त भाई-बहनें बड़े-बड़े पात्रों में भोजन लिए हुए हर व्यक्ति की थाली में उसकी आवश्यकता अनुसार भोजन परोसते हैं। ओम शान्ति के उच्चारण के साथ और उसी शान्ति के साथ हजारों व्यक्ति भी एक बारी में मेज-कुर्सियों पर बैठ कर भोजन करते हैं। खाने के बाद थाली बड़े टबों में रख कर, हाथ धोकर यदि चाहें तो चाय, काफी, सौंफ, इलायची अपनी सुविधानुसार ले सकते हैं। वे प्रकृति का आनन्द लेते हुए, बालकनियों में आत्मचिन्तन करते हुए अच्छे लगते हैं।

विचार गोष्ठियों में भ्रान्तियों पर भी चर्चा हुई। आत्मा का महत्त्व समझाया गया। **प्रत्येक आत्मा का अन्य आत्माओं के साथ भाई-भाई या भाई-बहन का संबंध है, यह बताया गया। सभी संयम से जीवन जीने का सुख लें। वहाँ धन की कोई माँग नहीं करता। प्यार और श्रद्धा की आवश्यकता है। आपको भी अवसर मिले तो अवश्य जाएँ आबू पर्वत।**

★★★

नजर बदली तो नजारे बदल गये

– ब्रह्माकुमार धनेश्वर प्रसाद, केन्द्रीय जेल, हिसार (हरियाणा)

कैसा चमत्कार? कभी कल्पना में भी नहीं सोचा था कि परमात्मा को पाना भी अपने भाग्य में है। प्रभु को पाने के लिए न जाने कितने सन्त-महात्माओं और अन्य आत्माओं ने अपने जीवन को होम कर दिया, जोखिम भरे बड़े-बड़े कारनामे कर डाले! ऐसी स्थिति में प्रभु को पाना मुझ जैसे साधारण व्यक्ति की तकदीर में हो सकता है, कभी विश्वास ही नहीं था। जिसको पाने के बाद और कुछ पाने की तमन्ना ही नहीं रह जाती। उनका मिलना छप्पर फट कर प्राप्ति होने जैसी बात है और अन्ततः परमात्म सान्निध्य का सौभाग्य मुझे मिल ही गया। कैसे मिला, उसका विवरण ज़रूर देना चाहूँगा।

ईश्वर पिता की सत्य पहचान पाने से पूर्व मैं भारतीय थल सेना में इन्जीनियरिंग कोर (विभाग) में एक मैकेनिक के पद पर पिछले 15 वर्षों से कार्यरत था। मेरा वास्तविक निवास स्थान जिला रायपुर (छत्तीसगढ़) के तहत एक छोटा-सा गाँव कुम्हारी (टैंक) है जहाँ मेरा परिवार, पत्नी व बच्चे रहते हैं। जब मैं मिलिट्री कैंट हिसार में सेवारत था तो मुझे 28 जनवरी 2001 को एक आपराधिक मामले के तहत बँदीगृह हिसार (हरियाणा) में जाना पड़ा। जेल के प्राँगण में कदम रखते ही ऐसा लगा मानो कि किसी और दुनिया में पहुँच गया हूँ। विचार करवट लेने लगे कि शायद ही अब पिछली दुनिया में वापसी हो सकेगी अथवा वह परिवार व समाज मिल सकेगा। ऐसी विपरीत हालत में मन व्याकुल और विचलित हो रहा था कि हजार कि.मी. घर से दूर यहाँ कौन मेरी पैरवी करेगा? किसको सहारा बनाऊँ? इस अविश्वास भरी दुनिया में किसको मददगार समझूँ? कैसे अब मेरा कल्याण हो सकेगा? इस प्रकार की अनगिनत शंकाएँ, कुशंकाएँ मन में मंडराने लगी थीं। इसी उधेड़बुन में समय बीतने लगा। मेरे लौकिक सम्बन्धी माँ, पत्नी, बच्चे, भाई आदि भी दूर घर से मुझसे जेल में मिलने के लिए आये। मुझे काफी उम्मीद थी कि वे उचित कदम उठा कर मुझे जेल से अवश्य ही छुड़ा लेंगे लेकिन ऐसा सम्भव नहीं हो सका। उन्होंने कोई भी कानूनी कार्यवाही करने में

अपनी असमर्थता जाहिर कर दी। अब मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? नितान्त अकेला और बेसहारा हो गया। फिर मन में एक विचार कौंधा कि क्यों न परमात्मा का सहारा लिया जाए। यह तो सुन ही रखा था कि 'जिसका कोई नहीं होता उसका तो खुदा है यारो ....'। यही विचार आधार बना परमात्मा की ओर आकर्षित होने का। अब सवाल उठा कि किस विधि से परमात्मा को याद किया जाए? उस समय जेल में कोई मंदिर या धार्मिक संस्थान नहीं था। भक्ति मार्ग की विधियों अनुसार इतना सुन रखा था कि संस्कृत के श्लोकों, मन्त्रों आदि द्वारा स्तुति करने से प्रभु प्रसन्न होते हैं और वांछित फल की प्राप्ति होती है। इसी आधार पर लगभग डेढ़ साल तक मैंने विभिन्न देवी-देवताओं से

संबन्धित श्लोक, आरती आदि याद कर लिए और पूजा तथा अन्य अनुष्ठानों की विधि द्वारा उन्हें प्रसन्न करने में लगा रहा। लेकिन श्लोकों व आरती आदि को ऊँची आवाज में उच्चारित करते रहने से शारीरिक कमजोरी आने लगी। साथ ही कोई विशेष मानसिक शान्ति अथवा प्राप्ति की महसूसता भी नहीं हुई। अपितु एक अनजाना-सा भय, लोभ और काम विकार आदि ज्यों-के-त्यों बने रहे। विकारों पर किसी भी प्रकार से विजय नहीं हुई।

इसी दौरान एक शाम जेल परिसर में सफेद वस्त्रधारी भाई-बहनों द्वारा ईश्वरीय ज्ञान से संबन्धित चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में चित्रित ज्ञान, भक्ति मार्ग से भिन्न था। इसमें परमात्मा का वास्तविक स्वरूप बताया गया कि वे निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं, उनका दिव्य नाम शिव है और वे वर्तमान समय नर से श्री नारायण तथा नारी से श्री लक्ष्मी बनने की शिक्षा दे रहे हैं। भक्ति मार्ग में तो मैं श्री लक्ष्मी व श्री नारायण को ही भगवान समझ कर उनकी पूजा कर रहा था पर यहाँ जाना कि स्वयं को उनके जैसा बनाने की शिक्षा ग्रहण करनी है और इसके लिए कोई श्लोक तथा मन्त्रोच्चारण करने की भी आवश्यकता नहीं है। आत्मा व परमात्मा का परिचय व्यवहारिक तौर पर दिया गया जो कि मुझे बहुत सहज लगा। सरलतापूर्वक समझ में भी आ गया। प्रदर्शनी में यह भी समझा कि कैसे एक कमजोर आत्मा परमपिता परमात्मा से शक्ति लेकर स्वयं में शक्तियों को भर सकती है और कमजोरियों का अन्त कर गुणग्राही बन सकती है। तत्पश्चात् जेल में ही नियमित रूप से सुबह-शाम परमात्म-ज्ञान की कक्षा का संचालन होने लगा। मुझे अच्छा लगने लगा, **राजयोग की विधि द्वारा स्वयं का परमात्मा से संबंध स्थापित कर शक्तियों से ओतप्रोत होने से हल्कापन महसूस होने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि बाबा की कक्षा में सभी के साथ मिल कर ज्ञान अर्जन करने में काफी सहुलियत अनुभव होने लगी। बहुत सारी नई-नई बातों का अनुभव भी होने लगा जैसे कि सकारात्मक संकल्पों का सकारात्मक परिणाम एवं नकारात्मक संकल्पों का नकारात्मक परिणाम। जो कुछ हम दूसरों को देंगे, वही हमें वापस मिलेगा। परायों (शत्रुओं) के प्रति नफरत की भावना मिट गई। लगने लगा कि ये पराए भी किसी-न-किसी कमजोरी के शिकार हैं। इनसे बदला लेने की भावना रखना अथवा इनसे कुछ प्राप्ति की आकांक्षा रखना भी स्वयं को कमजोर बनाना ही है। मेरा मन परोपकारी हो गया।**

जिस कारागार में प्रवेश करते ही मन व्याकुल व विचलित हो उठा था, चारों तरफ लाल-लाल ईंटों की विशाल दीवारें देख कर मन अनजाने भय से और अनिश्चितकालीन बंधन के खौफ से सिहर उठा था वहीं अब जेल का सारा नजारा बदला-बदला-सा लगता है। मेरी नजरें रूहानी बन गईं तो नजारा भी रूहानियत से भरपूर लगने लगा। यहाँ का वातावरण एक सुखद आश्रम की अनुभूति देता है। बाहर और अन्दर की दुनिया के अभाव और दूरियाँ समाप्त हो गई हैं। पिछले तीन साल से नियमित परमात्म-ज्ञान प्राप्त कर रहा हूँ। हिसार के स्थानीय राजयोग केन्द्र के निमित्त भाई-बहनों का तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ जिनकी श्रेष्ठ मार्ग-प्रदर्शना से यह उत्तम सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

अब तो बस यही इच्छा है कि गाँव-घर जाकर अपने बाल-बच्चों को भी ज्ञानामृत देने के साथ-साथ अधिक-से-अधिक गाँववासियों व पिछड़े हुए जनसमूहों तक परमात्मा का संदेश पहुँचाऊँ और सभी को परमपिता परमात्मा के अनमोल रत्नों की प्राप्ति का अनुभव करवाऊँ। उन्हें भी परमात्म विरासत का अधिकारी बनाऊँ।

वह प्यारा-सा सपना

– ब्रह्माकुमारी कस्तूरबा, कांकेर

नवरात्रि से दो दिन पहले मैंने मौन के महत्त्व पर एक चर्चा सुनी और जाना कि नवरात्रि के दिनों में अधिकतर लोग पवित्र रहते हैं, वातावरण भक्तिभाव वाला होता है, ऐसे में, मौन में रह कर प्यारे बाबा को याद करने से अच्छे-अच्छे अनुभव होते हैं। मैं ब्रह्माकुमारी केन्द्र से साल भर से जुड़ी हूँ, मुझे भी प्रेरणा मिली कि क्यों न मैं भी मौन में रह कर ईश्वरीय अनुभूति करूँ।

नवरात्रि शुरू हुई तो मैं अमृतवेले उठ बाबा के सामने बैठ गई और कहा - बाबा, मैं आज से मौन व्रत रख रही हूँ, मेरी मदद करना, कोई परेशानी नहीं आने देना। आश्रम पर, मुरली की पॉइन्ट जब निमित्त बहन ने मुझसे पूछी तो मैंने पर्ची आगे बढ़ा दी, जिस पर लिखा था - 'मैं मौन व्रत में हूँ।' कार्यालय में भी लिखित पर्ची से सबको ज्ञात हो गया कि मैं नौ दिन मौन में रहूँगी। बिना कोई परेशानी के समय बीतता गया। मैं बाबा को रोज बताती रही कि आज इतने दिन हुए हैं।

आश्रम पर भट्ठी (गहन योगाभ्यास) चल रही थी। पहले दिन मैं सुबह 8 बजे से 12 बजे तक लगातार बैठी। पाँचवें दिन सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक बैठी। आठवें दिन सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक बिना किसी सहारे के बैठी रही। मुझे खुद आश्चर्य हो रहा था कि पहले तो 10 मिनट बैठते ही पैर सुन्न पड़ जाते थे और दर्द होने से पूरा ध्यान हट जाता था पर अब एहसास होने लगा कि मेरा योग लगने लगा है तभी तो एक-डेढ़ घण्टे एक ही स्थिति में बैठे रह जाती हूँ। योग का अनुभव बताऊँ तो वह ऐसा था जैसे कि मैं परिन्दे के रूप में आकाश में उड़ रही हूँ, उड़ रही हूँ पर सूक्ष्म वतन जाने का मार्ग नहीं मिल रहा है और मैं थक-हार कर फिर वापस आ जाती हूँ। बस, यही अभ्यास करती रही। सभी सोचते कि इतने समय से यह एक ही जगह बिना किसी सहारे के बैठी है तो ज़रूर इसे कुछ अनुभव हो रहा होगा। मैं सोच में पड़ गई कि जब मेरा मौन टूटेगा तब सब पूछेंगे कि क्या अनुभव हुआ, तो क्या बोलूँगी। अष्टमी की रात को सोने से पहले मैंने बाबा के सामने बैठ यह परेशानी बताई और कहा कि एक दिन रह गया है, यदि मुझे कुछ अनुभव नहीं कराओगे तो कल से मुरली सुनने नहीं जाऊँगी और भी मैं बहुत शिकायतें करती रही, गिड़गिड़ाती रही, मेरे आँखों में आँसू भर आये, फिर भी बाबा चुपचाप बैठे रहे, मुझे लगा कि अब बाबा कुछ नहीं करेंगे, काफी रात हो गई थी, मैं चुपचाप सो गई। देर रात तक जागरण होने के बाद भी तीन बजे मेरी आँखें खुल गई। उठ कर बैठ गई। मैंने बाबा को गुड मॉर्निंग की पर अचानक याद आया कि मैं तो बाबा से नाराज हूँ, जब वे मेरी बात नहीं सुनते तो मैं भी सुबह-सुबह क्यों अपनी नींद खराब करूँगी। 'बाबा, मैं आपको याद नहीं करूँगी', ऐसा कह कर मैं पुनः सो गई। नींद बहुत गहरी थी, अचानक नींद में झटका लगा, मुझे लगा कि कोई मुझे हिला-हिला कर उठा रहा है, मैं उठ कर बैठ गई, पूरे कमरे में उजाला-ही-उजाला भरा था, मेरी समझ में नहीं आया कि आखिर इतना उजाला कैसे हुआ। मेरी आँखें चौंधिया गईं थीं। आँखें मल-मल कर देख रही थी फिर भी सामने प्रकाश आ रहा था और गौर से देखा तो एक नन्हीं-सी बच्ची थी, सफेद वस्त्र पहने। उसके पीछे छोटे-छोटे पंख लगे थे। मैंने कहा - तुम कौन हो ? वह बोली - मैं तुम्हारी आत्मा हूँ और मैं सूक्ष्म वतन जा रही हूँ। फिर वह पंछी की भाँति उड़ते-उड़ते सूक्ष्म धाम में पहुँच गई, सामने ही बाबा बैठे थे। बहुत धीरे से बच्ची की आवाज निकली - 'बाबा'। बाबा धीरे से मुस्कुराए और

बोले - 'आ गई बच्ची, मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था। आओ बच्ची, बाबा के पास।' बच्ची बाबा के नजदीक गई, बाबा ने उसे अपनी गोद में बिठाया। बड़े ही प्यार से बच्ची के सिर को सहलाते हुए कहने लगे - **'बच्ची, मेहनत तो बहुत करती हो, ऐसे ही तुम मेहनत और लगन से मुझे याद करती रहना, सफलता जरूर मिलेगी। बच्ची, अभी तो तुम पैदा हुई हो, जैसे बच्चे जन्म लेते हैं पर तुरन्त थोड़े ही बोलना शुरू कर देते हैं, वैसे ही तुम भी धीरे-धीरे याद की यात्रा में परिपक्व हो जाओगी, तुम्हें जरूर सफलता मिलेगी।'**

'अच्छा बाबा, अब मैं चलूँ।' 'हाँ बच्ची, पर कभी बाबा से नाराज नहीं होना।' और फिर नन्हीं बच्ची उड़ती-उड़ती आने लगी। अचानक फिर झटका लगा। मैं उठ कर बैठ गई। पाँच बज रहे थे। मैं सपना देख रही थी। पर क्या वह सिर्फ सपना था? मुझे संतोष हुआ कि वह सपना ही सही पर बहुत प्यारा सपना था। मुझे एहसास होने लगा कि मुझे और भी मेहनत करनी है, बाबा को याद करना है। मैं उठ कर बाबा के सामने बैठ गई, उनसे सारे गिले-शिकवे समाप्त हो चुके थे। भाई-बहनों से मैं यही कहना चाहूँगी कि सच्चे मन से, सच्ची लगन से बाबा को याद करते रहें तो ज़रूर सफलता मिलेगी।

आबू तीर्थ आओ

– ब्रह्माकुमार अमर, छीपीटोला, आगरा

है शिव का सन्देश सभी को! जीवन दिव्य बनाओ।
एक बार बस! एक बार ही, आबू तीर्थ आओ।।
योग साधना, जप-तप, पूजा करके भी यदि हारे।
नहीं मिल सकी शान्ति, न पहुँचे सच्चे सुख के द्वारे।।
विश्वपिता शिव कहते बच्चे! मुलाकात कर जाओ .... एक बार बस
आबू तीर्थ आओ....

दुनिया में अब तक न मिला जो, वही यहाँ पाओगे।
होकर पूर्ण उपराम जीवन से, खुशी-खुशी जाओगे।।
हीरे-मोती से भी बढ़ कर विपुल सम्पदा पाओ .... एक बार बस
आबू तीर्थ आओ....

जाति, धर्म, भाषा, रंगों का गर भेद मिटाना चाहें।
रोग-शोक, दुःख भरी धरा को फिर से यदि हर्षायें।।
करने यह कार्य सम्पन्न सब मिल कर कदम बढ़ाओ .... एक बार बस
आबू तीर्थ आओ....

समय नहीं अब राजनीति में खोटे पेच लड़ाने का।
चक्कर में पड़ कर्म काण्ड कर, माला फूल चढ़ाने का।।
मुक्ति और जीवनमुक्ति का सहज मार्ग अपनाओ .... एक बार बस
आबू तीर्थ आओ....

चाहो, त्याग-तपस्या का मीठा फल यदि पाना।
जन्म-जन्म के लिए पुण्य का खाता और बढ़ाना।।
पावन बन कर प्रभु प्रेम से जीवन धन्य बनाओ .... एक बार बस
आबू तीर्थ आओ....

बहुत सहज यह बात स्वयं का जीवन दिव्य बनाना।
इससे भी अति सहज सभी को सच्चा मार्ग बताना।।
जीवन के जो प्रश्न अनुत्तरित समाधान पा जाओ .... एक बार बस
आबू तीर्थ आओ....

पुनर्जन्म – एक विवेचना

– ब्रह्माकुमार रामलखन, शान्तिवन

मृत्यु पूरे संसार के लिए पहेली बनी हुई है। एक भी आत्मा शरीर छोड़ने के बाद वापस आकर के उद्घोषणा नहीं करती कि मैं परलोक व पुनर्जन्म का सत्य रहस्य बताने आई हूँ। लाखों लोग रोज मरते हैं। देखते-सुनते हुए भी मृत्यु की व्याख्या कोई नहीं कर पाता है। सूफी शायर हूमी कहते थे कि पुनर्जन्म खुदा की अनुपम सौगात है। सृष्टि योजना में पुनर्जन्म एक स्वत: चालित शाश्वत विधान है। लौकिक दृष्टि वालों के लिए यह एक कष्टमय पहेली है। इसलिए ही राजा-रंक-फकीर सभी के सभी मृत्यु से बहुत घबराते हैं। प्रज्ञावान योगी की दृष्टि में मृत्यु तो आत्मा के लिए स्वादिष्ट मसाले की तरह है। जन्म-दर-जन्म इसी से ही जीवन ज़ायकेदार बना रहता है।

विज्ञान के साथ कई मतावलम्बी भी मृत्यु को ही जीवन का अन्तिम पड़ाव मानते हैं। मुस्लिम जन मानते हैं कि मृत्यु के बाद शरीर के साथ आत्मा भी दफना दी जाती है। कयामत के समय खुदा खुद आकर व्यक्ति का आज्ञापालन वा अवज्ञा का लेखा-जोखा देख कर जन्नत (स्वर्ग) या दोज़ख में भेज देते हैं। सनातनी संस्कृति आत्मा को अजर-अमर अविनाशी मानती है। शरीर प्रकृति के परिवर्तनशील तत्वों से बना होता है। चेतन आत्मा उन तत्वों को छोड़ कर कर्मों के अनुसार नए परिवार, वातावरण में पुनर्जन्म लेकर दु:ख या सुख भोगने लगती है। क्रिया की प्रतिक्रिया के अनुसार अविनाशी आत्मा को भी सभी कर्मों का फल भोगना पड़ता है। कभी इसी जीवन में भुगतान हो जाता है तो कभी पुनर्जन्म ले करके भुगतान करना पड़ता है। शरीर के जीन्स हर क्षण बदलते रहते हैं, दिखाई न पड़ने के कारण हम समझ नहीं पाते हैं। बचपन के बाद जवानी और उसके बाद बुढ़ापे को कौन रोक सकता है? मृत्यु द्वारा नवीन शरीर धारण करने की प्रक्रिया को कौन टाल सकता है? मोह के वशीभूत हो रोना तो उस आत्मा के खेल में बाधा डालते हुए दु:खी करना है।

मरण व पुनर्जन्म के लाखों आँकड़े तैयार किए जा रहे हैं। चिकित्सक तो मृत्यु के लिए इतना ही कहते हैं कि हृदय गति रुक गई है। तापमान बिल्कुल न होने से मस्तिष्क निष्क्रिय हो गया है। **मृत्यु के समय करोड़ों में से कोई ही जागृत की तरह अनुभव बता पाते हैं। पिछले जन्म की संकल्पना व कर्मों के अनुसार ही तैयार गर्भपिण्ड में आत्मा प्रवेश करती है। इसलिए गर्भ धारण के चार-पाँच मास तक चैतन्यता न होने से उदरस्थ पिण्ड में चुर-पुर नहीं होती है। आत्मा के गर्भ में प्रवेश करते ही माँ को सुख-दु:ख की अनुभूति होने लगती है। पूर्व निर्धारित हिसाब-किताब के अनुसार ही आत्मा परिवार में आती है। शरीर छोड़ने के बाद कई आत्माएँ तो सूक्ष्म शरीर धारण कर अपनी अतृप्त इच्छाएँ पूरी करने के लिए बहुत समय तक भटकती रहती हैं।** वैसे मृत्यु होते ही दूसरे पिण्ड में प्रवेश करना उनका स्वभाव होता है जिससे वे अनुकूल रूप से उसका विकास कर सकें। निम्न संस्कार वाली आत्माओं को शरीर भी टेढ़ा-बाँका वा रोगी-दु:खी मिलता है, उत्तम स्वभाव वालों को सौन्दर्य के साथ सुख-शान्तिमय पर्यावरण भी मिलता है। इसलिए कलियुग में गर्भ-जेल से जन्म होता है पर सतयुग में आत्मा गर्भ-महल से अवतरण करती है।

अचेतन मन को खोल सकें तो पूर्व जन्मों की सारी स्मृतियाँ फिर प्राप्त की जा सकती हैं। पुनर्जन्म को कभी रोका भी नहीं जा सकता क्योंकि इसके लिए कर्मों के प्रभाव को भी रोकना

पड़ेगा। सत्कर्मों के माध्यम से ही आत्मा अनन्त गुण, अनन्त सुख धारण किए रहती है। सुख वा दु:ख शरीर को नहीं होता। मरने के बाद शरीर को जलाओ-गाड़ो-मारो-गाली दो, कुछ भी महसूस नहीं होता। शरीर व इन्द्रियों के नष्ट होने पर भी रूह द्वारा अनुभव किए गए विषयों के प्रभाव उसमें बने रहते हैं। जीवन का अस्तित्व तो आत्मा पर ही निर्भर है।

पूर्व कर्मों के अनुसार ही माता-पिता, पति-पत्नी, सन्तान व धन आदि प्राप्त होते हैं। उनका सदुपयोग कर आगे बढ़ना ही पुरुषार्थ है। किसी के मन को दु:खाए बिना और चापलूसी किए बिना जो कुछ मिले वही अच्छा है। जिन कर्मों से मनुष्य निम्न कोटि का बनता है, वे हैं किसी को सताना, मारना, लोभ, कपट, असत्य भाषण, कुटिल बन फूट डालना, मिलावट-संग्रह करना, अनैतिकता से धन कमाना अपनी प्रशंसा व दूसरों की निन्दा करना आदि-आदि। उच्च कोटि के लोग विनयशील, सरल, किसी से भी राग-द्वेष न रखने वाले, अक्रोधी, अकामी तथा औरों को भय व चिन्ता से मुक्ति दिलाने वाले होते हैं। श्रम, सन्तोष और मैत्री से जीवन बिताने वाले श्रेष्ठ माता-पिता के घर में जन्म लेते हैं। ऐसी आत्माओं के लिए प्रकृति के पाँचों तत्व भी सुखों के द्वार खोले रखते हैं। जब परमात्मा की अनुकम्पा व शक्ति से आत्मा तेजोमय बनती है तब उसके कर्म बन्धन खत्म होते जाते हैं। भोग-विलास से बच कर जब श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा होता है तो मुक्ति व जीवनमुक्ति अधिकार रूप में मिलती है। आत्मा के पुन: विषय-विकारों में आसक्त होने से ही जन्मना-कर्म और कर्मणा-जन्म का ताँता लगा ही रहता है।

सम्मोहन विधि से प्रमाणित हो चुका है कि मनुष्य, मनुष्य का ही शरीर धारण कर पूर्व कर्मों का परिणाम भोगता है। अविनाशी मनुष्य आत्मा तो अपने सभी कर्मों का प्रभाव वहन करते हुए कल्प में 84 जन्म तक ले सकती है। चित्त में संचित संस्कार जन्म-जन्मान्तर से चलते आते हैं। अपने या किसी और कारण से मनुष्य आत्मा दूसरी योनि में जन्म ले सकती है इसका आज तक एक भी विवेकसंगत प्रमाण नहीं मिला है। मान लीजिए, चोरी करने के दण्ड स्वरूप बिल्ली योनि मिली तो संस्कार कहाँ से सुधरेंगे ? वह तो और ही चोरी करती हुई खाती-पीती रहेगी। फिर तो दण्ड पाकर सुधरने की बजाय जटिल संस्कारों वाली बन और ही नीचे उतरना पड़ेगा। इसलिए मनुष्य विकर्मों का फल मनुष्य तन के द्वारा ही भोगते हैं। अच्छे लोगों के संग और सत्संग से ही सुधार हो सकता है। कमलवत् जीवन तभी बन सकता है जब पुनर्जन्म को स्वीकार कर हम श्रेष्ठ पुरुषार्थ करने में प्राण-पण से जुट जाएँ। तभी आत्माएँ पावन बन कर सतोप्रधान, सुखदायी दुनिया का नवनिर्माण कर पायेंगी।

शरीरों के माध्यम से अभिनय करने वाली ऊर्जामय आत्माएँ परमाणुओं से शक्तिशाली पर सूक्ष्म होती हैं। जन्म-मृत्यु के द्वारा कर्मों में बँधती हुई आत्माएँ कल्प के अन्त में शक्तिहीन हो जाती हैं। सर्वशक्तिवान भगवान कल्पान्त में अवतरित हो अपने से सम्बन्ध जुड़वा कर उन्हें फिर से शक्ति सम्पन्न बनाता है। इस क्रम में आत्मा को कभी नर तो कभी नारी का चोला पहन कर अपना हिसाब-किताब चुकाना पड़ता है।

फलां बच्चा पिछले जन्म की बातें बताता है, ऐसे हजारों प्रकरण सामने आते हैं। वे बताते हैं कि अमुक मेरी पत्नी थी, अमुक बच्चे थे, ये-ये धन-सम्पत्ति थी और इन कारणों से मेरी मौत हुई। जाँच करने पर सब बातें हू-बहू सत्य होती हैं। किसी ने भी यह नहीं कहा है कि पिछले जन्म में मैं कुत्ता-बिल्ली-भैंस-चिड़िया या सर्प था। यदि विकर्मों को भोगने के लिए दूसरी योनि लेनी पड़ती है तो पाप करने वाले सभी मानव, पशु, पंछी, कीड़े आदि ही बन जाते। फिर तो मनुष्यों की जनसंख्या एकदम घट जानी चाहिए थी। जनसंख्या का बढ़ते जाना मनुष्य योनि में ही पुनर्जन्म का प्रत्यक्ष प्रमाण है। ब्रह्मलोक से आने वाली आत्माएँ गिरावट की

तरफ जाती हुई जन्म-दर-जन्म यहाँ ही चक्र काटती रहती हैं।

मनुष्य योनि में ही विकर्मों के फल मिलते हैं तो दूसरी योनियों में जाकर दु:ख उठाना गलत है। जैसे चने के बीज से आम पैदा नहीं होता वैसे ही मनुष्य आत्मा भी मनुष्य का ही तन धारण कर सकती है। लख चौरासी में लख का अर्थ होता है देखना वा समझना। उर्दू में बिन्दी हटा देने पर ख़ुदा को जुदा पढ़ा जाता है। ठीक वैसे ही लख को लाख समझ लेने से शास्त्रों में भ्रान्तियाँ भर दी गई हैं। मनुष्य एक कल्प में अधिक से अधिक 84 जन्म ले सकता है। 'चूको ना चौरासी' का भाव है कि इस चौरासिवें जन्म में पुरुषार्थ नहीं किया तो पछतायेंगे।

अमेरिका के प्रसिद्ध परा-मनो-वैज्ञानिक डॉ. स्टीवेन्सन दुनिया भर में घूम कर, बीसों साल तक पुनर्जन्म का विवरण लेते रहे। सैंकड़ों घटनाएँ घटना-स्थल पर जाकर उन्होंने स्वयं देखीं-परखीं। उनकी पुस्तकें मनुष्य द्वारा मनुष्य रूप में ही पुनर्जन्म लेने की साक्षात् गवाह हैं। विकर्मों का फल भोगने के लिए कीट-पतंगों, पशु-पक्षियों की योनि में जाने की क्या जरूरत है? कई मनुष्यों को तो बहुत मेहनत-मशक्कत के बाद भी बिछाने के ठीक बिस्तर नहीं मिलते हैं। कई कुत्ते-बिल्ली फाइव स्टार सुविधाओं के साथ घूम रहे हैं। जिन अंगों द्वारा विकर्म किया जाता है वे इसी जन्म में नहीं तो अगले जन्म में कमजोर-बीमार या खण्डित मिलते हैं। सारा जीवन लोग दु:ख व गरीबी भोगते हैं। पिछले कर्मों के कारण ही कोल्हू के बैल की तरह पिसते रहते हैं। कत्ल जैसे कर्म कर जेलों में सड़ते हैं। कर्मों के प्रभाव निराकारी आत्मा के साथ दूसरे जन्मों में स्थानान्तरित हो जाते हैं।

जीवन एक निरन्तर चलती रहने वाली प्रक्रिया है। मृत्यु रूपी नवीनता के द्वारा आत्मा नया तन रूपी वस्त्र धारण करती है। एक ही माता-पिता के जुड़वाँ बच्चों में भी स्वभाव-संस्कार, खान-पान और भाग्य में अन्तर पाया जाता है। यह उसी आत्मा के पूर्व जन्मों के संस्कारों और कर्मों का ही परिणाम है। डॉ. बेनर्जी के पास हज़ारों पूर्व जन्मों के प्रमाण हैं जिनमें मनुष्य के मनुष्य बनने की ही कहानी है। पाँच सौ साल पहले, सोलहवीं सदी में विश्व की जनसंख्या 50 करोड़ थी। सत्रहवीं शताब्दी में बढ़ कर 73 करोड़ तो अठारहवीं में 125 करोड़ हो गई। उन्नीसवीं सदी में 200 करोड़ लोग ही धरती पर रहते थे पर 1971 में 370 करोड़ हो गए। सन् 1984 में 480 करोड़ हुए तो सोलह साल बाद ही बीसवीं सदी में छ: सौ करोड़ को पार कर गए। इतनी मौतों के बाद भी रोज लाखों पैदा हो जाते हैं। सन् 1947 में भारत की जनसंख्या 33 करोड़ थी। अब सौ करोड़ को भी पार कर गई है। सोलहवीं सदी में एक वर्ग कि.मी. में 16 लोग ही रहते थे। अभी करीब 200 रहते हैं। अत: कल्प लाखों वर्ष का नहीं मात्र पाँच हज़ार साल का ही होता है। चौरासी लाख योनियों में मनुष्य को नहीं भटकना पड़ता है पर अन्तिम चौरासिवाँ जन्म सफल करने पर स्वर्णिम सुखों के अधिकारी बनते हैं। **परमात्मा का भी जन्म व कर्म दिव्य है। वे मनुष्यों की तरह माँ के गर्भ से पैदा नहीं होते हैं। अकर्त्ता होने के कारण उन्हें पूर्व जन्म का संचित कर्म भोगना नहीं पड़ता। वे तो साधारण अनुभवी तन (ब्रह्मा) में प्रवेश कर नई दुनिया का निर्माण करवाते हैं। राग-द्वेष, अभिमान या स्वार्थ से प्रेरित होकर वे कोई कर्म नहीं करते हैं। इच्छानुसार आते-जाते रहने के कारण वे सदा स्वतन्त्र हैं। देवी-देवताओं को पूर्व जन्म में पुरुषोत्तम संगमयुग पर किए पुरुषार्थ के अनुसार देह प्राप्त होती है।** देवलोक में नवीन संस्कार ग्रहण करने की ज़रूरत नहीं रहती क्योंकि पुण्य कर्मों को भोगने में ही वे मगन रहते हैं। श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा करने के लिए तो कलियुग व सतयुग के संगम पर श्रेष्ठ कर्म करने पड़ते हैं।

❖❖❖

बुराई की रीस को छोड़ अच्छाई की रेस करो

पवित्रता की रक्षा ही.........पृष्ठ 01 का शेष

इसी तरह, एक बड़ी बहन अपने बहुत छोटे आयु वाले भाई से आर्थिक सहायता की क्या आशा रख सकती है? आज की कमरतोड़ महँगाई के जमाने में जबकि संयुक्त परिवार अस्त-व्यस्त हो गए हैं और पेट पालने के लिए कन्याओं-माताओं को भी नौकरी करनी पड़ती है, तो रक्षा-बन्धन का आर्थिक महत्त्व बिल्कुल नहीं के बराबर ही है। आज के नर-नारी अनिश्चित भविष्य की आर्थिक व्यवस्था के लिए जीवन बीमा को महत्त्व देते हैं, न कि रक्षा-बन्धन को।

लाज की रक्षा

रक्षा बन्धन के उपलक्ष्य में दूसरा प्रचलित मन्तव्य यह है कि भाई, बहन की पवित्रता, लाज अथवा सतीत्व की रक्षा करेगा। यह बात भी वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में पूरी नहीं घटती। क्या लाज की रक्षा पिता, पति, अन्य सम्बन्धियों, शासन अथवा समूचे समाज का कर्त्तव्य न होकर केवल भाइयों का ही कर्त्तव्य है? एक बहुत छोटा भाई अपनी बड़ी बहन की लाज की रक्षा तो कर ही नहीं सकता। इसी रीति यदि बहन किसी दूर देश में रहती है तो अचानक संकट पड़ने पर भाई के लिए उसके सम्मान की रक्षा करना तो दूरी के कारण सम्भव ही नहीं है। फिर, जब सारे समाज की सभी बहनें भी भाइयों को रक्षा बाँधती हैं तो विचार की बात है कि उनकी पवित्रता को किससे खतरा है? अवश्य ही यह पतित, विकारी और गिरे हुए समाज का चिन्ह है कि मनुष्य दूसरों की बहनों को अपनी बहन के समान न समझें और उनकी काम वृत्ति के कारण, समूचे समाज की सभी बहनों की इज्जत को, सभी भाइयों से खतरा हो। ऐसी हालत में तो रक्षा बाँधती हुई हर बहन को अपने भाई से यह कहना चाहिए कि - ''जैसे तुम मुझे अपनी बहन समझते हो वैसे ही अन्य नारियों को भी अपनी बहन समझोगे तभी मेरी लाज का बचाव हो सकता है, अन्यथा नहीं।'' परन्तु सिनेमा, फैशन, माँस-मदिरा इत्यादि व्यसनों से ग्रसित और चरित्रहीनता की चरम सीमा पर पहुँचे हुए निर्लज्ज समाज के भाइयों में वह पवित्रता का बल और वह सामर्थ्य ही कहाँ है, जो वे अपनी बहनों को ऐसा वचन दे सकें और उनकी लाज की रक्षा कर सकें। कलियुग के अन्त तक तो मनुष्य इतने कामातुर, इतने अन्धे हो जाते हैं कि नारियों को खुले आम कैबरे नृत्य (Cabaret Dance) करने पर मजबूर करके, शर्म से डूब मरने की बजाये, खुश होते हैं।

रक्षा-बन्धन का प्रारम्भ

ऐसी संकट की वेला के बारे में ही द्रोपदी और एक दुर्योधन का वर्णन दृष्टान्त के रूप में किया गया है। परन्तु वास्तव में यह चरित्र-चित्रण सारे समाज की दुर्दशा का है। जब व्यभिचार की अति हो जाती है और पाप का घड़ा भर जाता है तो कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि के 'संगमयुग' की वेला में गीता के भगवान शिव स्वयं अवतरित होकर यह महावाक्य उच्चारते हैं कि - ''हे **आत्माओ! काम महाशत्रु है। यही सबसे बड़ी हिंसा है, आदि-मध्य-अन्त दु:ख देने वाला है। इसी के द्वारा यह सृष्टि पतित और वेश्यालय बन गई है, जहाँ घर-घर में काम कटारी चलती है। काम-विकार नर्क का द्वार है। तुमने ही मुझ पतित पावन परमात्मा को पुकारा है। अब मैं इस कलियुगी वेश्यालय को सतयुगी शिवालय बनाने के लिए अवतरित हुआ हूँ। अब इस कलियुगी पुरानी दुनिया का विनाश और सतयुगी नई दुनिया की पुनर्स्थापना होनी है। उस सतयुगी देवलोक में सम्पूर्ण निर्विकार आत्माएँ ही जन्म ले सकेंगी। पवित्रता ही सुख और शान्ति की जननी है। यदि तुम पवित्र बनोगे तो नूतन विश्व के मालिक बनोगे वरना विनाश को प्राप्त हो जाओगे। अत: अब मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि सारे कल्प के अपने इस**

अन्तिम जन्म में ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करो और पवित्र बनो।'' जो मनुष्य परमपिता परमात्मा शिव की इस कल्याणकारी आज्ञा को मान कर पवित्रता के बन्धन में बँधने को सहर्ष तैयार हो जाते हैं, उन्हीं की मन-वचन-कर्म से काम विकार से रक्षा के लिए, परमात्मा शिव उन्हें रक्षा-बन्धन के पवित्र सूत्र में बँधवाते हैं, जो उनके आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने की प्रतिज्ञा की प्रतीक है। इस प्रकार, इस पावन पर्व का प्रारम्भ स्वयं परमात्मा द्वारा पुरुषोत्तम 'संगमयुग' पर होता है।

बहन-भाई का पवित्र नाता

गोपीवल्लभ परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा सच्चा 'रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ' रच कर ईश्वरीय ज्ञान व योग और पवित्रता के बल से सर्वप्रथम अबला नारियों को सबला अथवा शिव-शक्तियाँ बनाते हैं। भारत में दुर्गा, अम्बा, काली, शीतला इत्यादि शिव शक्तियों का गायन-पूजन आज तक होता है। वास्तव में इन्हीं शिव शक्तियों अथवा चेतन ज्ञान-गंगाओं के द्वारा मनुष्यों को रक्षा-बन्धन बाँध कर ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करवाने का पावन कर्त्तव्य चलता है। ब्राह्मणों के द्वारा अपने यजमानों को राखी बाँधने की प्रथा भी प्रचलित है परन्तु कुख-वंशावली ब्राह्मण न तो रक्षा-बन्धन के महत्त्व को जानते हैं और न ही इनमें वह ईश्वरीय ज्ञान-योग का बल है जिससे वह स्वयं और दूसरों को पवित्रता की धारणा करवा सकें। वास्तव में, ब्रह्मा मुख वंशावली शिव-शक्तियाँ ही वे सच्ची ब्राह्मणियाँ (ब्रह्माकुमारियाँ) हैं जो स्वयं पवित्रता के व्रत को धारण करके अन्य मनुष्यों को भी इस कल्याणकारी बन्धन में बाँधने की अलौकिक सेवा करती हैं। रक्षा-बन्धन का पावन पर्व इन अलौकिक ईश्वरीय सेवाधारी बहनों के द्वारा ही शुरू होता है। पावन बनने के लिए वे पुरुषों को यह अनोखी युक्ति बताती हैं कि - **''सभी मनुष्य-आत्माएँ एक ही पिता परमात्मा की सन्तान होने के नाते से भाई-बहन ही तो हैं। इसी सम्बन्ध में स्थित होकर चलेंगे तो काम विकार का प्रश्न ही नहीं उठेगा।''** लौकिक बहन द्वारा भाई को राखी बाँधने की रस्म इसी महत्त्वपूर्ण रहस्य का विस्मृत रूप है।

राखी पर तिलक लगाने का महत्त्व

राखी बाँधने के बाद बहनें अपने भाइयों के मस्तक पर तिलक भी लगाती हैं। परन्तु, इस रस्म के भावार्थ को आज सभी भूल चुके हैं! वास्तव में, मस्तक अथवा भृकुटि का मध्य मनुष्य शरीर का वह स्थान है जहाँ आत्मा निवास करती है। जब शिव-शक्तियाँ मनुष्यों को अर्थ-सहित सच्चा रक्षा-बन्धन बाँधती हैं तो वे उन्हें परमात्मा शिव द्वारा बताये हुए ईश्वरीय ज्ञान का ये रहस्य भी सुनाती हैं कि - **''वास्तव में, आप नश्वर शरीर नहीं किन्तु अविनाशी आत्मा हो। आत्मा का असली स्वधर्म पवित्रता है। स्वयं को तथा दूसरों को आत्मा समझ कर कर्म करने से काम महाशत्रु पर स्वत: ही विजय प्राप्त हो जाती है क्योंकि काम विकार की उत्पत्ति का मूल कारण देह-अभिमान अर्थात् स्वयं को और दूसरों को शरीर समझना ही है।''**

वर्तमान समय परमात्मा शिव पुन: अवतरित हो चुके हैं और प्रजापिता ब्रह्माकुमारियों के द्वारा मनुष्यों को रक्षा-बन्धन के पवित्र सूत्र में बाँध कर उन्हें निकट भविष्य में स्थापित होने वाली सतयुगी पावन सृष्टि में चलने के योग्य बना रहे हैं।

▲▲▲

ज्ञानामृत के सभी लेखकों, पाठकों को पवित्रता के प्रतीक रक्षा-बन्धन पर्व की बहुत-बहुत हार्दिक बधाइयाँ!

– सम्पादक
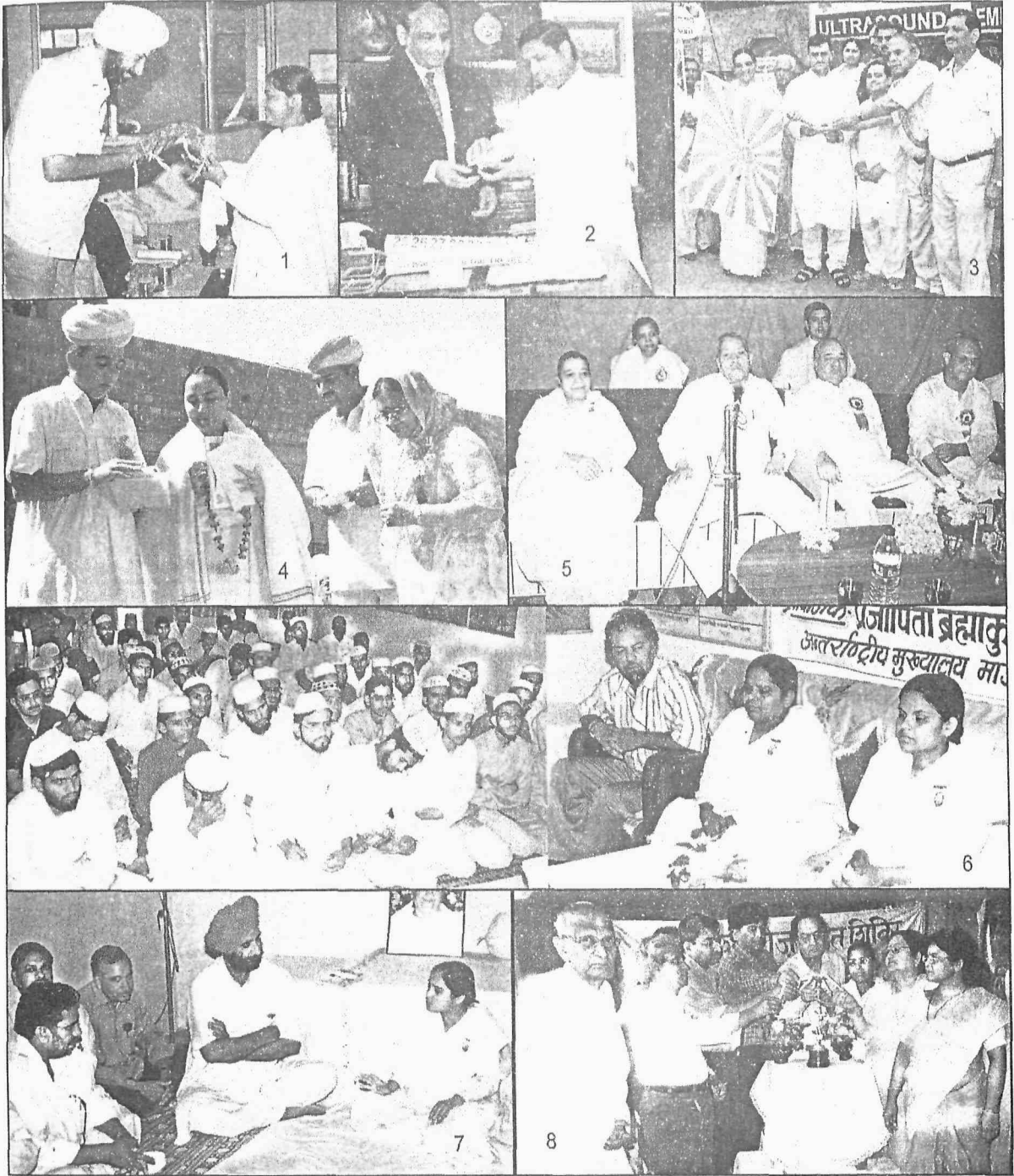
1. अमृतसर (विश्व शान्ति भवन)- सांसद भ्राता नवजोत सिंह सिद्धू का स्वागत करती हुई ब्र.कु. रश्मि बहन। **2. नई दिल्ली**- सी.बी.आई. के निदेशक भ्राता यू.एस. मिश्र को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. पीयूष भाई। **3. पठानकोट**- नशामुक्ति अभियान को शिवध्वज दिखा कर रवाना करते हुए एस.एम.ओ. डॉ. भ्राता रवि डोगरा जी। पूर्व मन्त्री मोहन लाल जी, ब्र.कु. सत्या बहन, प्राचार्य भ्राता समरिन्द्र शर्मा जी भी उपस्थित हैं। **4. जोधपुर**- सांसद भ्राता मानवेन्द्र सिंह जसोल, विधायक भ्राता बाबूसिंह राठौड़, समाज सेविका बहन अरुणा चौधरी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. रेणु बहन। **5. शाहबाद-मारकण्डा**- समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित अभियान के उपलक्ष्य में विचार व्यक्त करते हुए विधायक भ्राता कपूर शर्मा जी। ब्र.कु. अमीर चन्द भाई, ब्र.कु. कृष्णा बहन तथा अन्य भी साथ में हैं। **6. रामपुर (उ.प्र.)**- इस्लाम धर्म के अनुयायियों के बीच विचार गोष्ठी में मंच पर विराजमान हैं सर्वधर्म एकता मंच के अध्यक्ष भ्राता सय्यद अब्दुल्ला तारिक, ब्र.कु. पार्वती बहन तथा ब्र.कु. संगीता बहन। सामने ध्यानपूर्वक सुनते हुए भाई। **7. असन्ध**- विधायक भ्राता कृष्ण पँवार तथा अन्य के साथ ज्ञान-चर्चा करती हुई ब्र.कु. नीलम बहन। **8. फर्रुखाबाद**- अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य दिवस पर नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन करते हुए चिकित्सक तथा ब्र.कु. शोभा बहन।
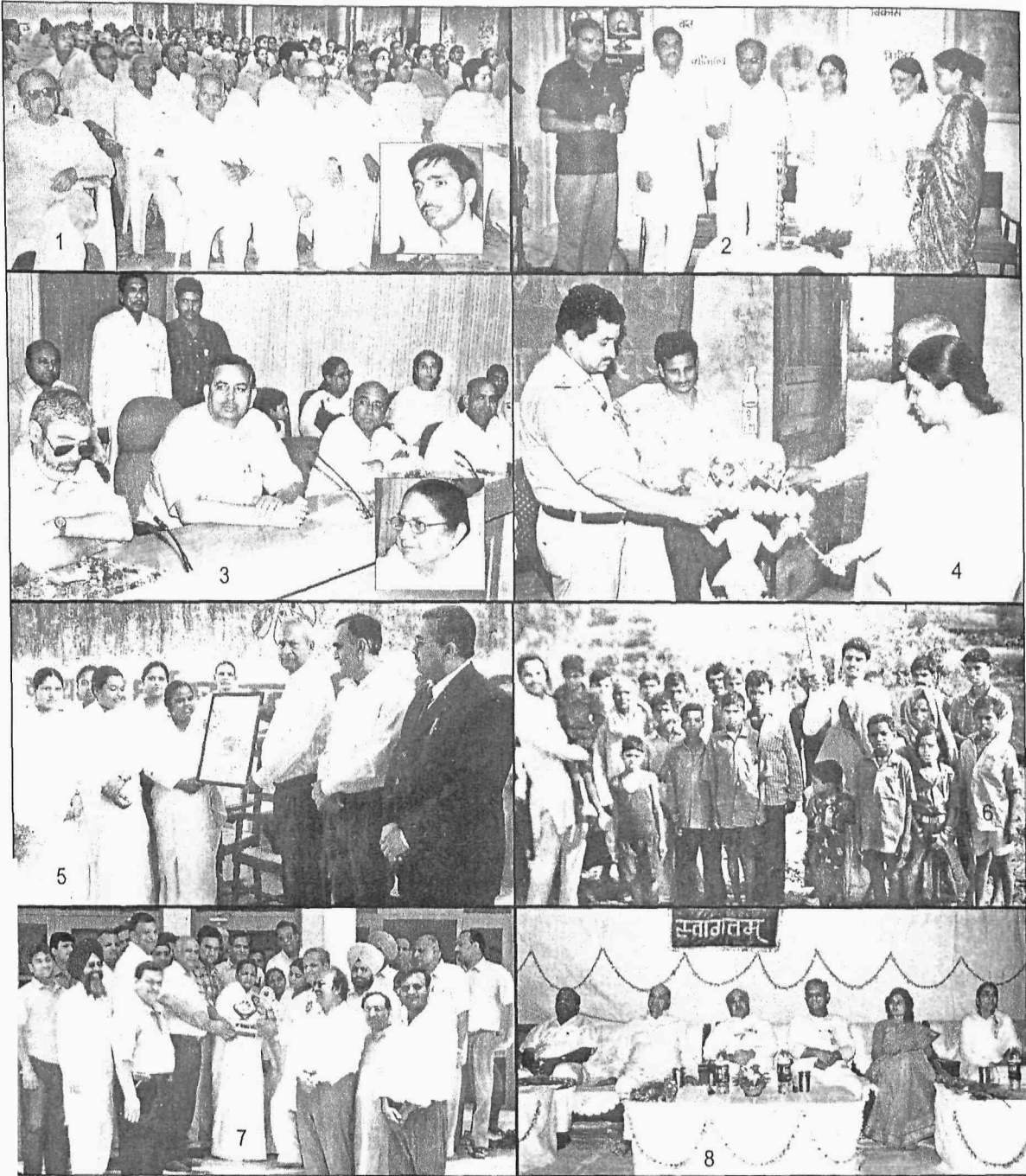
1. हिसार- समाज-उत्थान अभियान के स्वागत समारोह में सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कारागार अधीक्षक भ्राता जगबीर सिंह जी। **2. पालम विहार (गुड़गाँव)-** बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का उद्घाटन करते हुए शिक्षा प्रभाग के उप-निदेशक भ्राता अशोक चक्रवर्ती, मारुति उद्योग के नियुक्ति प्रबन्धक भ्राता आर.के. त्यागी जी, ब्र.कु. सुदेश बहन, ब्र.कु. उर्मिल बहन तथा प्राचार्या बहन सविता यादव। **3. देहली (कश्मीरीगेट)-** समाज सेवा अभियान के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. रानी बहन। रेलवे कार्यालय के अतिरिक्त सी.ए.ओ. भ्राता चन्द्रप्रकाश, मुख्य प्रशासक भ्राता ए.पी. मिश्रा, वित्त सलाहकार भ्राता आर.सी. चौहान तथा अन्य भी उपस्थिति हैं। **4. सितारगंज (बरेली)-** व्यसनमुक्ति दिवस पर व्यसनों का पुतला जलाते हुए वरिष्ठ पुलिस उपनिरीक्षक भ्राता नरेश चन्द्र, नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी भ्राता एल.एम. दास तथा ब्र.कु. प्रभा बहन। **5. फतेहपुर (महादेवन टोला)-** जेल अधीक्षक भ्राता पी.एन. सिंह को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. गीता बहन। साथ में हैं बाल जेल अधीक्षक तथा अन्य बहनें। **6. सोनभद्र (यू.पी.)-** आदिवासियों के साथ ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु. अविनाश भाई तथा ब्र.कु. अखिलेश भाई समूह चित्र में। **7. सुनाम-** समाज सेवा अभियान के आगमन पर पंजाब नेशनल बैंक के प्रबन्धक भ्राता एम.एल. वर्मा जी, ब्र.कु. प्रेम भाई, ब्र.कु. राधा बहन तथा अन्य सभी का अभिनन्दन करते हुए। **8. बल्लबगढ़-** "मूल्य एवं आध्यात्मिकता" विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं लायन्स क्लब अध्यक्ष डॉ. भ्राता ए.के. सिंघल, जिला कांग्रेस अध्यक्ष भ्राता बी.आर. ओझा, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. प्रेम भाई तथा अन्य।

1. **शामली**- "आध्यात्मिक एकता द्वारा परमात्म प्रत्यक्षता" कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में विचार व्यक्त करते हुए लायन्स क्लब के अध्यक्ष भ्राता ए.के. रस्तोगी जी। ब्र.कु. सरला बहन तथा ब्र.कु. भारत भूषण भाई भी साथ में हैं। 2. **देसुरी**- ज्ञान-चर्चा के बाद एस.डी.एम. भ्राता राजेन्द्र कविया जी परिवार सहित ब्र.कु. शुचीता बहन तथा ब्र.कु. शीतल बहन के साथ। 3. **कुरुक्षेत्र**- समाज सेवा अभियान कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं जिलाधीश भ्राता सुभाष चन्द्र गोयल, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. प्रेम भाई तथा अन्य। 4. **हाथरस**- मातेश्वरी जी के स्मृति दिवस पर आयोजित सभा के मंच पर उपस्थित हैं डॉ. भ्राता के.पी. शर्मा, पूर्व ऊर्जा मन्त्री रामवीर उपाध्याय, जिला परिषद अध्यक्षा बहन सीमा उपाध्याय, ब्र.कु. सीता बहन तथा अन्य। 5. **कैथल**- समाज सेवा अभियान कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं जिला समाज कल्याण अधिकारी भ्राता सत्यावान, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई तथा अन्य। 6. **राजकोट**- विज्ञान रेल चल प्रदर्शनी के आगमन पर आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी के उद्घाटन में उपस्थित हैं उमेश भाई शुक्ल, स्टेशन प्रबन्धक भ्राता वी.जे. सागठिया, स्टेशन मास्टर भ्राता आर.के. भालोडिया, ब्र.कु. भगवती बहन, ब्र.कु. बृजलाल भाई तथा अन्य। 7. **देहली (मुनिरका डीडीए फ्लैट)**- ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. शान्ति बहन। 8. **कमालगंज**- विधायक भ्राता जमालुद्दीन सिद्दीकी जी को ईश्वरीय साहित्य देती हुई ब्र.कु. मधु बहन। 9. **वलसाड**- "क्रोधमुक्त जीवन" शिविर का उद्घाटन करते हुए नगरपालिका प्रमुख दीपक भाई राणा, डी.एच.ओ. भ्राता पाण्डे जी, ब्र.कु. रंजन बहन तथा ब्र.कु. मगन भाई। 10. **सोनीपत**- महामण्डलेश्वर अवधेशानन्द जी द्वारा आयोजित भागवत कथा का उद्घाटन करती हुई ब्र.कु. जनक बहन। 11. **कालांवाली मण्डी (बठिण्डा)**- नगरपालिका अध्यक्षा बहन पुष्पा नारंग को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सन्तोष बहन।

1. सादड़ी- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एस.डी.एम. भ्राता राजेन्द्र कविया जी, उद्योगपति भ्राता रामजी लाल, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. शुचीता बहन तथा ब्र.कु. शैल बहन। **2. भीलवाड़ा-** नशामुक्ति आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी की व्याख्या रोडवेज डिपो प्रबन्धक भ्राता श्रीवास्तव तथा अन्य के समक्ष करते हुए ब्र.कु. अमोलक भाई। **3. गाँधीधाम-** चल-वाहन द्वारा ईश्वरीय सेवा के दौरान ग्रामवासियों को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. स्मिता बहन। **4. आहवा-** सम्पूर्ण ग्राम विकास स्नेह मिलन कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. गोविन्द भाई, ब्र.कु. गीता बहन, पंचायत प्रमुख, तलाटी, सरपंच तथा अन्य भाई-बहनें। **5. भरूच (झाड़ेश्वर)-** "अलविदा तनाव" कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ओ.एन.जी.सी. के प्रबन्धक निदेशक भ्राता मंडेल जी, भ्राता जयेश पटेल, ब्र.कु. प्रभा बहन तथा अन्य। **6. मानसा (पंजाब)-** प्राचार्या बहन भूपेन्द्र कौर तथा स्टाफ के सदस्यों को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु. सुदेश बहन उनके साथ। **7. टोहाना-** समाज सेवा अभियान के सदस्यों को सम्मानित करते हुए एस.डी.एम. भ्राता सतबीर सिंह सैनी। **8. जालन्धर-** "तनाव मुक्त जीवन की कला" विषयक कार्यक्रम में मंच पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रघुबीर भाई। सामने श्रोतागण दिखाई दे रहे हैं।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन-307510,
आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail: gyanamrit@vsnl.com   Ph.No.: (02974) 228125, 228126   bkatamad1@sancharnet.in

1. गुवाहाटी- आसाम के राज्यपाल महामहिम भ्राता अजय सिन्हा जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई। साथ में हैं ब्र.कु. शीला बहन तथा ब्र.कु. मीरा बहन। **2. बामनिया (झाबुआ)**- मध्यप्रदेश की मुख्यमन्त्री बहन उमाश्री भारती को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. ज्योति बहन। **3. धर्मशाला (हि.प्र.)**- ग्रीष्मोत्सव-2004 के उद्घाटन समारोह में वन मन्त्री भ्राता चन्द्र कुमार जी तथा राजस्व मन्त्री भ्राता बृज विहारी बुटेल जी, ब्र.कु. उमा बहन से ईश्वरीय सौगात लेने के पश्चात् ग्रुप फोटो में। **4. ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश)**- अरुणाचल प्रदेश के उपमुख्यमन्त्री भ्राता कामेंग डोलो तथा श्रीमती डोलो के साथ समूह चित्र में हैं सचिव भ्राता के.वी. नायर, ब्र.कु. जूनू बहन तथा अन्य। **5. दुर्ग (छ.ग.)**- 'बाल व्यक्तित्व विकास' शिविर के पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन करते हुए जनजागरण परिषद, छ.ग. के महासचिव भ्राता किशोर ठाकुर, समाजसेवी भ्राता प्रवीण आढ़तिया, भ्राता शंकर अग्रवाल, ब्र.कु. कमला बहन तथा ब्र.कु. रीता बहन। **6. जबलपुर (कटंगा)**- मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती जी के 39वें पुण्यस्मृति दिवस पर उपस्थित हैं रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति भ्राता एस.पी. गौतम जी, नगर अध्यक्ष, म.प्र. कांग्रेस कमेटी, भ्राता राममूर्ति मिश्र जी तथा म.प्र. उच्च शिक्षा की अतिरिक्त निदेशिका बहन शान्ता बजाज। ब्र.कु. विमला बहन मातेश्वरी जी का जीवन परिचय देते हुए। **7. अम्बाला छावनी**- 'श्रेष्ठ समाज पुनर्निर्माण अभियान' के आगमन पर ब्र.कु. अमीरचन्द भाई का स्वागत करते हुए प्रसिद्ध उद्योगपति एवं सिटीजन कौंसिल के अध्यक्ष भ्राता डॉ. एम.सी. जैन। **8. नई देहली (हरि नगर)**- पुलिस प्रशिक्षुओं के लिए आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् भ्राता डॉ. यू.एन.वी. राव जी, आई.पी.एस., जाइन्ट कमीश्नर ऑफ पुलिस तथा प्राचार्य, पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अनुसूया बहन।

Regd. No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/ 25/12/2003-2005, Posted at Shantivan – 307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)- राजनेताओं के लिए रखे गए कार्यक्रम के दीप प्रज्वलन समारोह में राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, भ्राता एस.एस. महापात्रा, पूर्व सांसद ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. शीलू बहन तथा ब्र.कु. शशि बहन।

शान्तिवन (आबू रोड)- कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा आयोजित परिचर्चा के दीप प्रज्वलन समारोह में फिल्मी कलाकार भ्राता आशुतोष राणा, टी.वी. कलाकार परीक्षित साहनी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, ब्र.कु. रमेश भाई, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा ब्र.कु. मुन्नी बहन।

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)- 'बेहतर व्यवस्थापन के लिए नया दृष्टिकोण' विषयक परिचर्चा का उद्घाटन करते हुए हरियाणा के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम भ्राता बाबू परमानन्द जी, श्रीमती सुदेश, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. महेन्द्र भाई, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. हरीश भाई तथा ब्र.कु. शीलू बहन।

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)- 'नेशनल स्पोर्ट्स डायलॉग कम स्पिरिचुअल ट्रेनिंग' कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में भ्राता जयवन्त लेले, बहन मीना बोरा, राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी तथा ब्र.कु. शशि बहन तथा अन्य।

रायपुर (छ.ग.)- मातेश्वरी जी की 39वीं पुण्यतिथि पर अयोजित समारोह में गृहमन्त्री भ्राता बृजमोहन अग्रवाल जी को ईश्वरीय साहित्य भेंट करती हुईं ब्र.कु. कमला बहन एवं ब्र.कु. सविता बहन।